

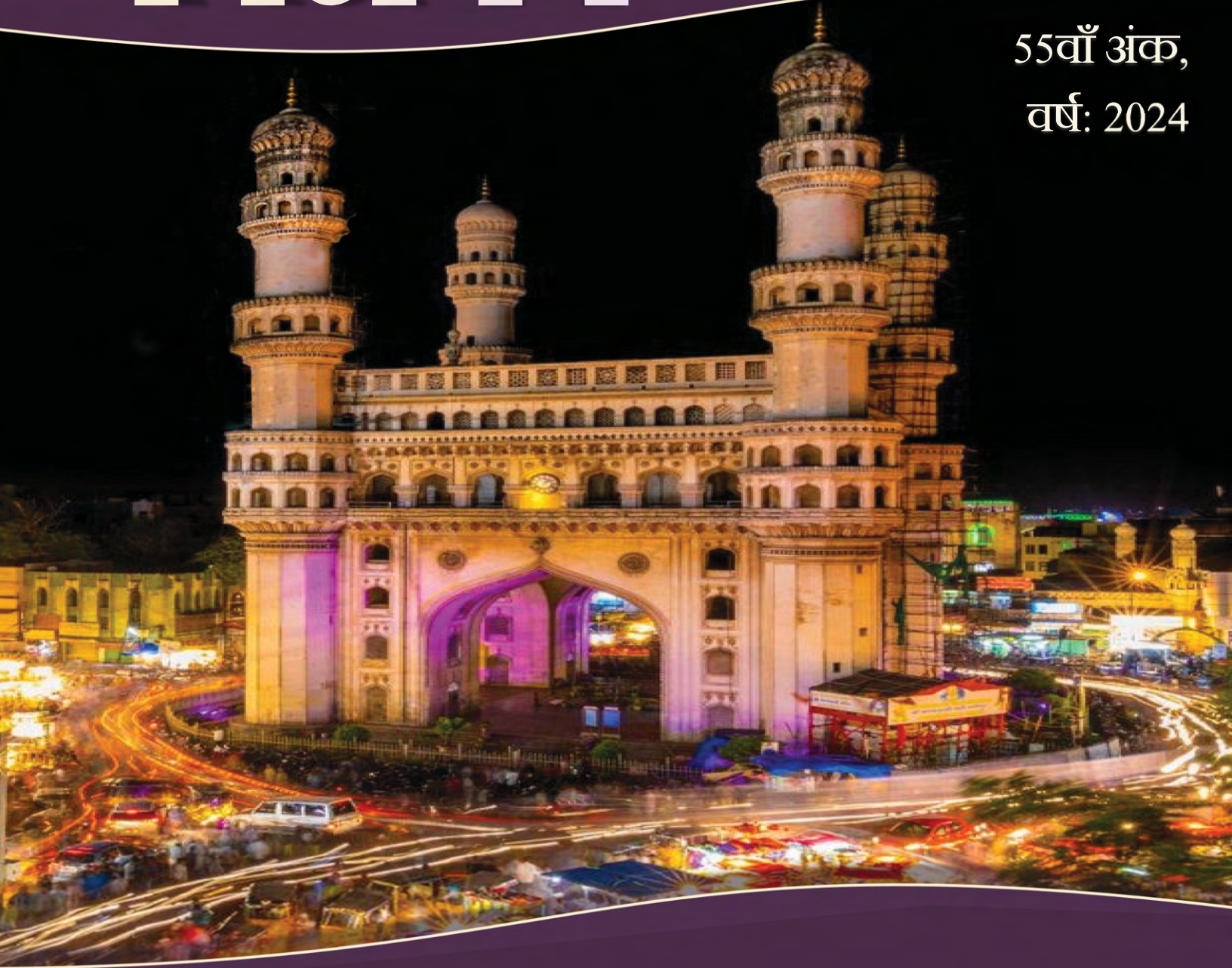


भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
तेलंगाना, हैदराबाद



कलिका

55वाँ अंक,
वर्ष: 2024



कार्यालय महानिदेशक, क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, हैदराबाद
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना, हैदराबाद
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) तेलंगाना, हैदराबाद
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद

गांव का लुभावना दृश्य



श्री धृति

कक्षा-9

पुत्री- चारुदत्त एम.

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
तेलंगाना



चारमीनार का इतिहास

भारत के हैदराबाद, तेलंगाना में स्थित चारमीनार एक ऐतिहासिक स्मारक है, जिसे हैदराबाद की धड़कन भी कहा जाता है। चारमीनार का निर्माण कुतुब शाही वंश के पाँचवें शासक मुहम्मद कुली कुतुब शाह ने 1591 ई० में कराया था। कुतुब शाह ने अपनी राजधानी गोलकुण्डा से हैदराबाद स्थानान्तरित करने के बाद स्मारक के रूप में इस मीनार का निर्माण करवाया था। यह इमारत विश्व स्तर पर हैदराबाद के ऐतिहासिक महत्व को 425 सालो से अपने अनोखे अंदाज में प्रस्तुत करती है। इस मीनार को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा एक पुरातात्विक और वास्तुशिल्प खजाने के रूप में सूचीबद्ध किया।

इतिहासकार बताते हैं कि हैदराबाद शहर के ले-आउट की शुरुआत चारमीनार से ही हुई है। चारमीनार एक तरह से गोलकुण्डा से लेकर समुद्र तटीय शहर मछलीपट्टनम के ऐतिहासिक व्यापार मार्ग के ठीक बीच में स्थित है। वैसे तो इस मीनार के निर्माण का उद्देश्य गोलकुण्डा और मछलीपट्टनम के मार्ग को जोड़ना था ताकि व्यापार में और सुगमता लायी जा सके। लेकिन ऐसा भी कहा जाता है कि मुहम्मद कुली कुतुब शाह के शासन के दौरान हैदराबाद के आस-पास क्षेत्र में प्लेग महामारी फैल गई थी जिससे अपने लोगों को बचाने के लिए कुतुब शाह को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। प्लेग महामारी पर विजय के उपलक्ष्य में उन्होंने हैदराबाद में इस मीनार का निर्माण करवाया था और तब से यह मीनार हैदराबाद के प्रतीक के रूप में विश्व विख्यात है।

यह इमारत फारसी वास्तुकला से प्रेरित है। चारमीनार की इमारत ग्रेनाइट, चूना पत्थर, मोर्टार और संगमरमर से बना है। चारमीनार एक वर्गाकार चार मंजिली इमारत है। इसके चारों मीनार चारों तरफ बने हैं। प्रत्येक मीनार पंखुड़ियों जैसे आधार पर बना है, जिसमें बल्बनुमा गुंबद बने हुए हैं। संगमरमर की सजावाट, बालकनी और बालकनी में बना जंगला इस चारमीनार को खास बनाते हैं। ऊपरी मंज़िल पर जाने के लिए मीनार में 149 सीढ़ियां भी हैं।





कलिका परिवार

मुख्य संरक्षक

सुश्री चंदा पंडित, प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

संरक्षक

श्री राकेश सी. सज्जन, वरिष्ठ उप-महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

प्रधान संपादक

श्रीमती जे. आर. रजिनि, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

संपादन मंडल

डॉ कल्पना वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक - श्रीमती पूजा कुमारी साव, कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

श्रीमती किरणदीप कौर, वरिष्ठ अनुवादक - श्री लोकेश चन्द्र लाल, वरिष्ठ अनुवादक
सुश्री शालिनी केशरी, कनिष्ठ अनुवादक - सुश्री मैशर जहाँ, कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री दीपशिखा सिंह, कनिष्ठ अनुवादक - सुश्री जागृति, कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री नंदिनी साव, कनिष्ठ अनुवादक - श्री विशाल साव, कनिष्ठ अनुवादक
श्री रोहन कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

1. महानिदेशक (क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान) हैदराबाद का संदेश
2. प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
3. महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), हैदराबाद का संदेश
4. महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
5. वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
6. उपमहालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद का संदेश
7. संपादकीय

क्रम. सं.	नाम एवं पदनाम	रचना का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	ज्योति दीक्षित, हिन्दी अधिकारी	मुझे पसंद है	14
2.	श्री लोकेश चंद्र लाल, वरिष्ठ अनुवादक	शब्द कुछ कहते हैं	15
3.	वी. सुधा, स.ले.प.अ.	मेरी कनाडा यात्रा	20
4.	डॉ कल्पना वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक	तनाव के प्रति स्वस्थ प्रतिक्रिया	22
5.	श्री विजय कुमार शुक्ल, स.ले.प.अ.	महिला सशक्तिकरण	25
6.	जे.वी.एस गंगाधर शास्त्री, व.ले.प.अ.	मध्य कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम	28
7.	एम. जानकी दिवाकरन, व.ले.अ.	खुशबू	35
8.	पूजा कुमारी साव, कनिष्ठ अनुवादक	किताबों की महत्ता	37
9.	महाराज गुप्ता, स.ले.प.अ.,	आत्मिक प्रसन्नता	38
10.	श्री देव नाथ, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	विश्व कल्याण में भारत का योगदान	41
11.	आशुतोष राय, लेखाकार	गाँव की बकैती	43
12.	जानकी नंदन, लेखापरीक्षक	बकीला	44
13.	श्री विशाल साव, कनिष्ठ अनुवादक	इंतज़ार	49
14.	श्री खैरूल वरा, लेखापरीक्षक	लोकतंत्र और कैग	51
15.	गोविंदराज कोटगिरे, लेखाकार	विनम्रता की अहमियत: दिनचर्या, कार्य स्थल संस्कृति और मानव संबंधों में	55
16.	नंदिनी साव, कनिष्ठ अनुवादक	महिला सशक्तिकरण : आशय और आवश्यकता	57
17.	श्री अतुल कुमार, लेखापरीक्षक	माँ	60
18.	सौरव पाण्डेय, लेखापरीक्षक	जिंदगी के नाम	61
19.	श्री रोहन कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	हमारे बुजुर्ग: हमारी धरोहर	63
20.	शाहिद रजा खान, लेखापरीक्षक	रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान	67
21.	श्रीमती काजल कुमारी, स.ले.प.अ.	मैं खुशी ढूँढती हूँ	69
22.	गौरव कृष्ण श्रीवास्तव, व. लेखापरीक्षक,	मेरी साइकिल यात्रा	72

अस्वीकरण: लेखकों/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/ लेख पुनरीक्षण समिति/संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।



सुश्री सी. सैलजा

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान हैदराबाद

संदेश

हिंदी की संयुक्त गृह पत्रिका 'कलिका' का 55वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को पत्रिका के माध्यम से एक मंच प्राप्त होता है। साथ ही, पाठकों के बहुमूल्य सुझाव पत्रिका को हर बार एक नया एवं सुंदर स्वरूप प्रदान करते हैं। हैदराबाद परिसर में स्थित संयुक्त कार्यालयों की इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ/लेख तथा कविता में विषय का विवरण सहज एवं सुबोध तरीके से किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि समस्त रचनाकार एवं पाठकगण अपनी सहभागिता नियमित रूप से बनाये रखेंगे तथा राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान हमेशा प्रदान करते रहेंगे। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

सी. सैलजा

(सी. सैलजा)

महानिदेशक



सुश्री चंदा पंडित

प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना

संदेश

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी हैदराबाद परिसर में स्थित चार कार्यालयों की हिंदी संयुक्त पत्रिका 'कलिका' के 55वें अंक का प्रकाशन किए जाने पर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुये अत्यधिक गर्व एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। 'कलिका' शब्द कली, कोपल, कला एवं छन्द का सूचक है। अपने नाम के अनुरूप पत्रिका में अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा अपनी कला, सृजनात्मकता, ज्ञान एवं नवीन विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

मैं संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों को उनके सहयोग व समर्पण के लिए धन्यवाद प्रेषित करते हुए सभी पाठकों से अपेक्षा करती हूँ कि अपनी प्रतिक्रिया से हमें जरूर अवगत कराएं ताकि राजभाषा को समर्पित इस पत्रिका को और उन्नत बनाया जा सके। पत्रिका की निरंतरता बनाए रखने के लिए हमें आप सभी के सहयोग की अपेक्षा रहेगी।

(चंदा पंडित)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)



सुश्री हेमा मुनिवेंकटप्पा

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि संयुक्त हिंदी पत्रिका 'कलिका' के 55 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा विभाग के दायित्वों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक प्रमुख दायित्व है।

इस पत्रिका में कर्मचारियों द्वारा रचित विविध विधाओं की मूल रचनाएं संकलित की गई हैं एवं उनके बच्चों द्वारा किए गए चित्रांकन को भी विशेष स्थान दिया गया है। यह पत्रिका कर्मचारियों का हिंदी भाषा के प्रति लगाव, उनकी कला एवं भावों को प्रकट करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिंदीतर भाषी द्वारा प्रस्तुत हिंदी रचनाएं एक अलग महत्व रखती हैं। रचनाओं में अपने अनुभवों को व्यक्त करने के साथ-साथ कंप्यूटर पर हिंदी यूनिकोड का उपयोग करते हुए रचनाओं को टाइप कर प्रस्तुत करना अपने-आप में विशेष है। यह हिंदी के प्रगामी प्रयोग के प्रोत्साहन की दिशा में एक सार्थक कदम है।

मुझे पूरा विश्वास है कि 'कलिका' का 55 वां अंक पिछले अंकों की भांति पाठकों को पसंद आएगी। पत्रिका में संकलित रचनाएं पाठकों के लिए रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। 'कलिका' के संबंध में आपके मूल्यवान सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

संपादक मंडल, रचनाकारों एवं पाठकों को हार्दिक शुभेच्छा के साथ...

(हेमा मुनिवेंकटप्पा)

महानिदेशक



श्रीमती पी.माधवी

महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना

संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका “कलिका” के 55वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के मुख्यालयों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन हिंदी पत्रिका की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हमारी हिंदी गृह पत्रिका “कलिका” भी न केवल कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को सशक्त मंच उपलब्ध करवाने में अपनी भूमिका निभा रही है, बल्कि गृह मंत्रालय एवं मुख्यालय के निर्देशों का पालन करती हुई, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रयासरत है।

मैं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हृदय से बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे। पाठकों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

माधवी
(पी. माधवी)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना



श्री राकेश सी. सज्जन

**वरिष्ठ उपमहालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), तेलंगाना**

संदेश

संयुक्त पत्रिका 'कलिका' का नवीन अंक आपके समक्ष लाना एक सुखद अनुभूति है। वास्तव में, कार्यालयीन पत्रिका कार्यालय कर्मियों की रचनाधर्मिता का प्रतिबिंब होती है जिसमें उनके भावों-विचारों आदि की झलक दिखाई देती है। संविधान में राजभाषा हिंदी का महत्व देखते हुए केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन एक मील का पत्थर माना जा सकता है। पत्रिकाओं का प्रकाशन एक सुदृढ़ राष्ट्र के लिए राजभाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करने का माध्यम होता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार को हमें राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में ग्रहण करना चाहिए। चारों कार्यालयों की विभिन्न गतिविधियों को भी छायाचित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।

मुझे यह विश्वास है कि आपको यह संचय बहुत पसंद आएगा तथा मेरी यह कामना है कि यह कारवां नई ऊंचाइयों को छूते हुए आगे बढ़ता रहे।

शुभकमनाओं सहित.....

**राकेश सी. सज्जन
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)**



श्री डी. राजाशेकर

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), तेलंगाना

संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका “कलिका” के 55वें अंक के प्रकाशन पर मुझे बहुत अधिक प्रसन्नता हो रही है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के मुख्यालयों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन हिंदी पत्रिका की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पत्रिका का उद्देश्य कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रुचि पैदा करना तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे। पाठकों की उत्साहवर्धक एवं प्रेरणादायक प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डी. राजाशेकर)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)



श्रीमती जे आर रजिनि

**वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), तेलंगाना**

संपादक की ओर से.....

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हैदराबाद परिसर में स्थित चार कार्यालयों की संयुक्त पत्रिका 'कलिका' का 55 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने हेतु पत्रिका का प्रकाशन एक सशक्त माध्यम है एवं रचनाकारों को उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को भी मुखरित होने का एक अवसर प्रदान करता है। संघ सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी की पत्रिकाएँ न सिर्फ राजभाषा हिंदी के अनुपालन के संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करती है बल्कि ये कार्मिकों को विभागीय कार्य में भी कुछ हद तक मदद करती है।

अपने दैनंदिन कार्यों में व्यस्तता के बावजूद 'कलिका' के लिए रचना प्रेषित करने वाले रचनाकारों एवं पत्रिका के सहयोगी संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई देती हूँ। आशा करती हूँ कि यह अंक हिंदी के प्रयोग को आशानुकूल रूप से बढ़ाने में सक्षम होगा और आप सभी की उम्मीदों पर खरा उतरेगा। पाठकों के सुझाव हमारे लिए सदैव अमूल्य है।

जे आर रजिनि

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

गणतन्त्र दिवस 2023 की झलकियाँ



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2024 की झलकियाँ



तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2023 की झलकियाँ



मुझे पसंद है

ज्योति दीक्षित

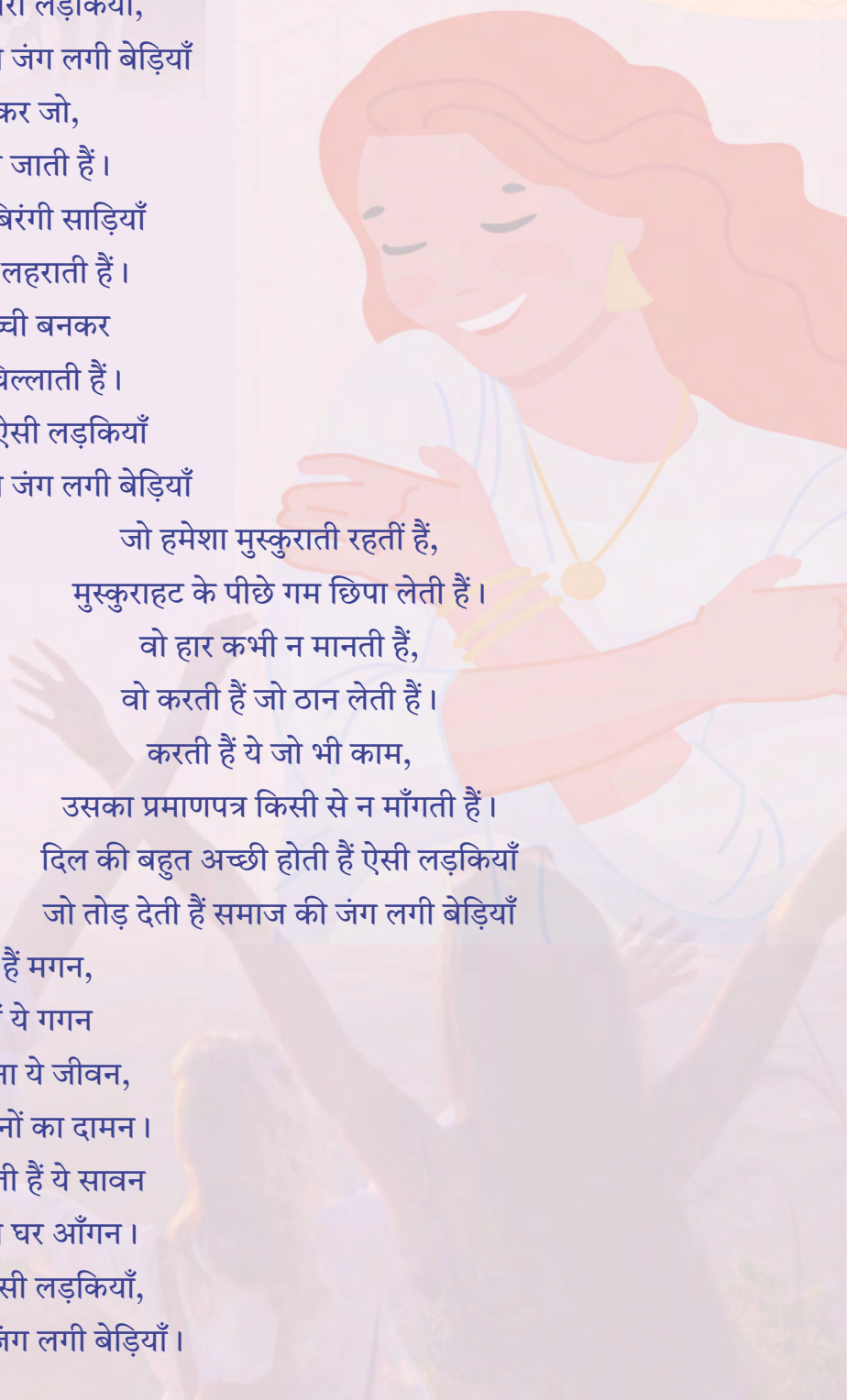
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) तेलंगाना



मुझे पसंद है वो आवारा लड़कियाँ,
जो तोड़ देती हैं समाज की जंग लगी बेड़ियाँ
जींस शर्ट पहनकर जो,
कभी घूमने निकल जाती हैं।
और कभी पहन रंग-बिरंगी साड़ियाँ
अपना पल्लू हवा में लहराती हैं।
कभी छोटी सी बच्ची बनकर
खूब जोर-जोर से चिल्लाती हैं।
बहुत प्यारी लगती है ऐसी लड़कियाँ
जो तोड़ देती हैं समाज की जंग लगी बेड़ियाँ

जो हमेशा मुस्कुराती रहती हैं,
मुस्कुराहट के पीछे गम छिपा लेती हैं।
वो हार कभी न मानती हैं,
वो करती हैं जो ठान लेती हैं।
करती हैं ये जो भी काम,
उसका प्रमाणपत्र किसी से न माँगती हैं।
दिल की बहुत अच्छी होती हैं ऐसी लड़कियाँ
जो तोड़ देती हैं समाज की जंग लगी बेड़ियाँ

अपनी धुन में रहती हैं मगन,
मौका मिले तो छुँ लें ये गगन
जी भरके जीती हैं अपना ये जीवन,
पर थाम के रखती हैं अपनों का दामन।
पतझड़ को भी कर सकती हैं ये सावन
महकातीं रहती हैं अपना घर आँगन।
तितलियों सी उड़ती हैं ऐसी लड़कियाँ,
जो तोड़ देती हैं समाज की जंग लगी बेड़ियाँ।



शब्द कुछ कहते हैं

श्री लोकेश चंद्र लाल

वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद



भाषा का मुख्य उद्देश्य विचारों को प्रकट करना है। भाषा की तकनीकी बनावट की बात करें तो भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है। वर्णों से शब्द, शब्दों से वाक्य और वाक्यों को जोड़कर वार्तालाप किया जाता है। हमने पढ़ा है कि एक या एक से अधिक वर्णों के मेल से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक इकाई शब्द कहलाती है। एक ही शब्द में उपसर्ग व प्रत्यय लगाकर, उसे जोड़ – तोड़ – मरोड़कर कई शब्द बनाए जा सकते हैं। एक ही शब्द को अलग – अलग क्षेत्र में अलग – अलग अर्थ के रूप में भी उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी के शब्द Cell को ही ले लीजिए। अलग – अलग क्षेत्र में सेल का अर्थ कोशिका, गुफा, आवरण, विद्युत बैटरी, कोठरी, खोली, मोबाइल, छोटा कमरा आदि होता है।

जब कोई शब्द किसी क्षेत्र में वह पारिभाषिक शब्द बन जाता होते हैं जो सामान्य व्यवहार की भौतिकी, रसायन, प्राणिविज्ञान, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, क्षेत्रों के विशिष्ट शब्द होते हैं और जिनकी होती है।

सामान्य व्यवहार या बोलचाल की से जुड़े शब्दों को पारिभाषिक शब्द कह प्रशासनिक रूप का उपयोग कार्यालय में कार्यों का संबंध विभिन्न सरकारी तथा गैर व्यवस्था से होता है। कार्यालयी भाषा सरकारी संबंधित होती है। अतः सुबोधगम्यता इसकी पहली कहा जाना अति आवश्यक होता है। सरकारी पत्रों की भाषा सीधी, सरल और सुसंगत होना अपेक्षित है। इसलिए न तो ठेठ स्थानीय और प्रचलित भाषा का प्रयोग होता है और न ही जटिल अथवा साहित्यिक भाषा का। अनेकार्थकता की यहाँ कोई गुंजाइश ही नहीं होती।

भारत के संविधान में भाग-XVII के अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा से संबंधित प्रावधान का उल्लेख किया गया है। अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा यानी राज-काज की भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप अर्थात् 0123456789 होगा। अतः देवनागरी लिपि में औपचारिक पत्र लिखते समय हमें ०१२३४५६७८९ अंकों का प्रयोग नहीं करके 0123456789 का प्रयोग करना चाहिए।



विशेष अर्थ प्रकट करने लगे तब है। पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्द भाषा के शब्द न होकर प्रशासन, दर्शन, गणित, इंजीनियरी, विधि, भूगोल आदि ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न अर्थ सीमा सुनिश्चित और परिभाषित

भाषा के शब्दों से परे ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों सकते हैं। इन पारिभाषिक शब्दों के प्रशासनिक कार्यों के लिए होता है। ऐसे सरकारी कार्यालयों की आंतरिक प्रशासन कर्मचारियों के साथ-साथ जन सामान्य से भी शर्त होती है। विषय को स्पष्ट सीधे सपाट शब्दों में

प्रायः देखा जाता है कि कार्यालय में अंग्रेजी पर निर्भरता अधिक है। उसका मूल शब्द या अंग्रेजी रूप तो उपलब्ध होता है किंतु यदि उन शब्दों के हिंदी रूपांतरण खोजने जाए तो बहुत समय लग जाता है या उसका हिंदी रूपांतरण हास्यास्पद सा हो जाता है। इसलिए कुछ विदेशी शब्दों को हिंदी में यथावत अपना लिया गया है। जैसे- स्टेशन, टिकट, क्रिकेट आदि। कार्यालयी भाषा में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली का मानक रूप वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा मानकीकृत किया जाता है। तकनीकी शब्दों का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म होता है। साथ ही साथ यह संभव है कि किसी एक शब्द की परिभाषा किसी दूसरे क्षेत्र में भिन्न हो सकती है। जैसे - चार्ज (Charge) शब्द का प्रशासन में अर्थ प्रभार, राजनीति में आरोप, वाणिज्य में खर्च/शुल्क, विज्ञान में आवेश आदि हो सकता है। इसी तरह पोस्ट (Post) का अर्थ प्रशासन में पद, चौकी या दर्ज करना, संचार में डाक, स्थापत्य कला में स्तंभ आदि हो सकता है। Problem शब्द वाणिज्य शास्त्र/गणित में प्रश्न को ध्वनित करता है जबकि समाज विज्ञान में समस्या को। इसीलिए इसे एक अर्थ एक शब्द का सिद्धांत भी कहते हैं। हर शब्द का स्वतंत्र अस्तित्व होना चाहिए ताकि उसे पढ़कर या सुनकर किसी अन्य पारिभाषिक शब्द का भ्रम उत्पन्न न हो। यदि हम कंप्यूटर प्रणाली से परिचित नहीं हैं तो हम माउस, प्रोग्रामिंग, मेमोरी, हार्ड डिस्क का सही तकनीकी अर्थ नहीं समझ सकते। प्रशासनिक शब्दावली पर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि इसकी एक विशेषता है कि इसमें संस्कृत, उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी के शब्दों का सम्मिश्रण है। जैसे- दस्तावेज (Documents), मुआवज़ा (Compensation), जुर्माना (Penalty), ब्यौरा (Details), तदर्थ (Ad hoc), सक्षम (Competent), पृष्ठांकन (Endorsement), स्पष्टीकरण (Explanation), कंप्यूटर (Computer) आदि।

नित-नई प्रगति के साथ-साथ नवीन वस्तुओं का भी निर्माण होने के कारण उनकी अभिव्यक्ति तथा नवीन संकल्पनाओं को स्पष्ट करने हेतु उनके अनुरूप नए शब्दों का निर्माण आवश्यक हो जाता है। पारिभाषिक शब्दों से आसानी से नए शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे अंकन से परांकन, मूल्यांकन, पृष्ठांकन, रेखांकन, सीमांकन आदि।

कार्यालय में पत्राचार हेतु उपयोग की जाने वाली भाषा सपाट और एकर्थी होती है इसलिए मुहावरों व कहावतों का प्रयोग न के बराबर किया जाता है क्योंकि इनका अर्थ लाक्षणिक या व्यंजनापूर्ण होती है। मुहावरा वाक्यांश होता है जिसका अर्थ होता है 'लाक्षणिक अर्थ में रूढ़ वाक्य का प्रयोग, अभ्यास आदि'। इसी तरह कहावत एक पूर्ण वाक्य होता है जो 'जीवन की सार रूपात्मक अभिव्यक्ति' होती है।

प्रशासनिक शब्दावली की अन्य विशेषता है सूक्ष्म तकनीकी अर्थ भेद। कुछ शब्दों के विशेष अर्थ होते हैं जिनका प्रयोग सही स्थान पर करना आवश्यक होता है वरना अनर्थ भी हो सकता है, जैसे सेवा से पदच्युति (Dismissal from Service), सेवा से हटाया जाना (Removal from service), सेवा समाप्ति (Termination of service), सेवा मुक्ति (Discharge from service), सेवानिवृत्ति (Retirement from service)। इसलिए इस प्रकार की संभावनाओं को रोकने के लिए उपयुक्त तथा स्पष्ट पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जरूरी हो जाता है।

किसी भी भाषा की शब्दावली के आधार पर ऐसे शब्दों को कठिन कहना एक हद तक गलत है क्योंकि शब्दावली तभी तक कठिन होती है जब तक कि उसका प्रचलन न हो। प्रशासनिक कामकाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा अत्यंत औपचारिक होती है जिसमें सर्वत्र शिष्टाचार का ध्यान रखा जाता है। इसलिए ऐसे टिप्पणियों, पत्रों या अन्य दस्तावेजों में जगह-जगह औपचारिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग दिखाई देता है। जैसे प्रिय महोदय (Dear Sir), प्रिय डॉक्टर लाल (Dear Dr Lal), महोदय (Sir), सेवा में (To), सादर (With regards), सद्भावना के साथ (With compliments), भवदीय (Yours faithfully), आपका (Yours sincerely), पुनश्च: (P.S./Post Script), प्रतिलिपि (Copy to) आदि।

अनुवाद में स्रोत भाषा की सामग्री का लक्ष्य भाषा की सामग्री से प्रतिस्थापन होता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि यह प्रतिस्थापन अर्थपरक तथा बुद्धि संगत और तदरूप होनी चाहिए। तभी अनुदित सामग्री सुपाठ्य बन पाती है। वास्तव में अनुवाद शब्दों का नहीं वरन् उसमें निहित अर्थ की आत्मा का होता है, उसके प्रतीक का होता है। कवि या लेखक अपनी रचना में अपने भावों को प्रकट करने के लिए प्रतीकात्मक, लक्षणात्मक एवं व्यंजनात्मक शब्दों का प्रयोग कर सकता है। लेकिन अनुवाद करते समय यह आवश्यक नहीं होता कि लक्ष्य भाषा में उन भावों को प्रकट करने के लिए उसी तरह के शब्द मिले और उसका उपयोग सार्थक रूप से किया जा सके।

एक ही रचना को अगर अनेक अनुवादकों द्वारा अनुवाद कराया जाए तो संभावित है कि अलग – अलग शब्दों का उपयोग किया जाए। उदाहरणार्थ कबीर का एक अत्यंत प्रसिद्ध और सरल सा दिखने वाला दोहा है –

राम नाम की लूट है, लूटि सकै तो लूट,
तू पीछे पछिताएगा, साँस जाएगी छूट।

इस दोहे का अंग्रेजी में अनुवाद अनेक अनुवादकों व विद्वानों ने किया है, फिर भी इसकी संभावनाएँ चुकी नहीं हैं। अनुवाद इस प्रकार है –

If you can plunder, plunder,
Let the name of Ram be your booty!
Otherwise, later you'll repent,
When you breath last! (Charlotte Vaudeville)

Rejoice, O Kabir
In this great feast
Of Love!
Once death
Knocks at your door,
This golden moment
Will be gone
Forever! (Sahdev Kumar)



(IGNOU की पुस्तक से उद्धृत)

इसमें से पहला अनुवाद बहुत कुछ शब्दानुवाद है, जबकि दूसरा अनुवाद भावानुवाद है। दूसरे अनुवाद में दोहे के भाव को प्रकट करने के लिए कलात्मक तरीका चुना गया है।

प्रशासनिक शब्दावली के अनुवाद में विश्लेषण की क्रिया जुड़ी होती है। वाक्यांश Action may be taken का अवलोकन करिए। इसका सामान्य अनुवाद होगा कार्रवाई की जा सकती है लेकिन कार्यालय की भाषा में यह नोट कोई अधिकारी अपने उच्चतर अधिकारी को नहीं लिखता बल्कि अपने से नीचे के अधिकारी या कर्मचारी को लिखता है। अतः उसमें सुझाव के साथ आदेश भी निहित रहता है इसलिए इसका अर्थ होता है कार्रवाई की जानी चाहिए या कार्रवाई करें।

यदि हम गौर करें तो पाएंगे कि टिप्पणी लिखते समय हम सहज और संक्षिप्त भाषा का प्रयोग करते हैं। लघु टिप्पणी या विस्तृत टिप्पणी में जटिलता का कोई स्थान नहीं है। कृपया जाँच करें, पूर्व पत्रों के साथ प्रस्तुत करें, समर्थित दस्तावेज संलग्न करें, मंजूरी दी जाती है, शीघ्र कार्रवाई करें, कार्रवाई अपेक्षित नहीं है, फ़ाइल करें, अनुमोदन हेतु प्रस्तुत आदि सहज टिप्पणी के उदाहरण हैं। यहाँ फ़ाइल करें के स्थान पर मिसिल करें भी लिखा जा सकता है लेकिन सहजता को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

कुछ वाक्यांशों एवं शब्दों के सहज रूप नीचे दिए गए हैं। कृपया अवलोकन करें –

Abide by - पालन करना	As far as possible - यथासंभव
Applicable to - पर लागू है	Continue in office पद पर बने रहना
By virtue of office - पद की हैसियत से	In continuation of - के क्रम में
Duly filled in - विधिवत भरा हुआ	Hold lien on post - पद पर पुनः ग्रहणाधिकार होना
In exercise of - का प्रयोग करते हुए	Action may be taken as proposed - यथा प्रस्तावित कार्रवाई करें
As a matter of fact - यथार्थतः / वस्तुतः	Drawing your attention to- की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए
As the case may be – यथास्थिति	Do the needful - आवश्यक कार्रवाई करें
In the official capacity - पदीय हैसियत से	Laid down in - में निर्धारित
In supersession of - का अधिक्रमण करते हुए	In the first instance - प्रथमतः
Prima facie - प्रथम दृष्टया	Made to order - आदेशानुसार निर्मित
Notwithstanding - के होते हुए भी	Out today आज ही भेजिए
Vide letter no. - पत्र संख्या देखिए	Under intimation to this office - इस कार्यालय को सूचित करते हुए
Advance – अग्रिम	Subsidy - आर्थिक सहायता
Inventory - वस्तु सूची	Cadre - संवर्ग
Recommendation – संस्तुति या अनुशंसा	Compensation - क्षतिपूर्ति
Reference – संदर्भ	Draft – मसौदा
Audit – लेखापरीक्षा	Payment - भुगतान

Sanction – संस्वीकृति	Designation - पदनाम
Re-payment – अदायगी	Supervisor- पर्यवेक्षक
Relevant – उपयुक्त	Retention - अवधारण
Short term - लघु अवधि	Resignation - त्यागपत्र या इस्तीफ़ा
Status quo – यथास्थिति	Attested – अनुप्रमाणित
Claim – दावा	Posting - तैनाती
Postpone – स्थगन	Audit Report - लेखापरीक्षा प्रतिवेदन
Dismiss - खारिज़ करना	Superannuation - अधिवर्षिता
Write off - बट्टे खाते में डालना / खारिज़ करना	Superintended अधीक्षक
Outward register- जावक पंजिका	Secretary - सचिव
Inward register - आवक पंजिका	Additional Director - अपर निदेशक
Assistant - सहायक	Under Secretary - अवर सचिव
By no Means- कदापि नहीं	Parent Office - मूल कार्यालय
Having regard to - को ध्यान में रखते हुए	Ex - पूर्व
By all Means - निसंदेह या अवश्य	Budget estimate- बजट प्राक्कलन
Deduction – कटौती	Head of Department - विभागाध्यक्ष
Errors and Omissions- भूल चूक	Head of Office - कार्यालय अध्यक्ष
Approval – अनुमोदन	For favour of orders - आदेशार्थ
Autonomous – स्वायत्त	Confirmation - पुष्टीकरण
Basic Pay - मूल वेतन	Contrary - विपरीत / प्रतिकूल
Countersigned प्रतिहस्ताक्षरित	Co-Ordination - समन्वय
UnderSigned अधोहस्ताक्षरित	Claim - दावा
Dispute- विवाद	Ex officio - पदेन
Ex-parte – पक्षपातवाला	Ex-post facto sanction कार्योत्तर संस्वीकृति
Formal – औपचारिक	Probation - परीक्षा
Perusal – अवलोकन	Satisfactory - संतोषजनक
Vacancy – रिक्ति	Call for an explanation - स्पष्टीकरण मांगना
Hard and fast rule - कठोर नियम	Eligibility - पात्रता
In the presence of - की उपस्थिति में	Serial No. - क्रम संख्या
General Manager – महाप्रबंधक	Submitted for Perusal - अवलोकन के लिए प्रस्तुत
Reminder – अनुस्मारक	With reference to the letter - पत्र के संदर्भ में
No Due Certificate - बेबाकी प्रमाणपत्र	Technical Resignation - तकनीकी इस्तीफा
Workshop – कार्यशाला	Honorarium – मानदेय
Ad hoc – तदर्थ	Entry- प्रविष्टि / दर्ज करना

मेरी कनाडा यात्रा

वी. सुधा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), तेलंगाना



यह लेख 2023 की गर्मियों में मेरी कनाडा यात्रा के बारे में है। मेरी बेटी और दामाद पिछले 2 वर्षों से कनाडा में बसे हुए हैं, इसलिए मेरी बेटी ने हमें आमंत्रित किया और हमारी यात्रा को प्रायोजित किया। कार्यालय से आवश्यक अनुमति प्राप्त करने के बाद, हमने वीज़ा के लिए आवेदन किया। कनाडाई वीज़ा, पासपोर्ट वैध होने तक की अवधि के लिए दिया जाता है। सभी दस्तावेज ऑनलाइन जमा किए गए थे और हम केवल बायोमेट्रिक्स के लिए हैदराबाद स्थित कनाडाई दूतावास गए थे। हमें एक महीने के भीतर वीज़ा मिल गया। आखिरकार सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद हम जून के पहले सप्ताह में टोरंटो के लिए रवाना हुए। अबूधाबी में 2 घंटे तक रुकना पड़ा। उड़ान की पूरी अवधि लगभग 20 घंटे की थी। हम काफी उत्साहित थे क्योंकि यह हमारी कनाडा की पहली यात्रा थी।

कनाडा में जून से सितंबर/अक्टूबर तक गर्मी रहती है और इसलिए हमारे पूरे प्रवास के दौरान मौसम बहुत सुहावना था। कनाडा दुनिया के विकसित देशों में से एक है और इसलिए हमने पाया कि शहर बहुत साफ सुथरे थे। यहां तक की कुत्ते के मल के लिए भी अलग कूड़ेदान है। कनाडा विशेष रूप से अपनी प्राकृतिक सुंदरता अपने जंगलों, झीलों और वन्य जीवन के लिए जाना जाता है। हमने इन चीजों का प्रत्यक्ष अनुभव किया। हर जगह हरियाली की प्रचुरता देखकर हम आश्चर्यचकित थे। बड़े-बड़े पेड़ थे, फूल और बगीचे पूरी तरह खिले हुए थे। टोरंटो में और उसके आसपास बहुत बड़े-बड़े पार्क थे और हमने पाया कि यहाँ के लोग गर्मियों के दौरान बाहर रहना पसंद करते हैं। वे व्यापक व्यवस्था के साथ पार्कों में पिकनिक मनाते थे। लोग खेल उपकरण, चटाइयाँ, भोजन और पेय लाते और पूरा दिन बाहर बिताते थे। यह इसलिए क्योंकि यहाँ की सर्दी बहुत भीषण होती है और 6 महीने से अधिक समय तक रहती है।

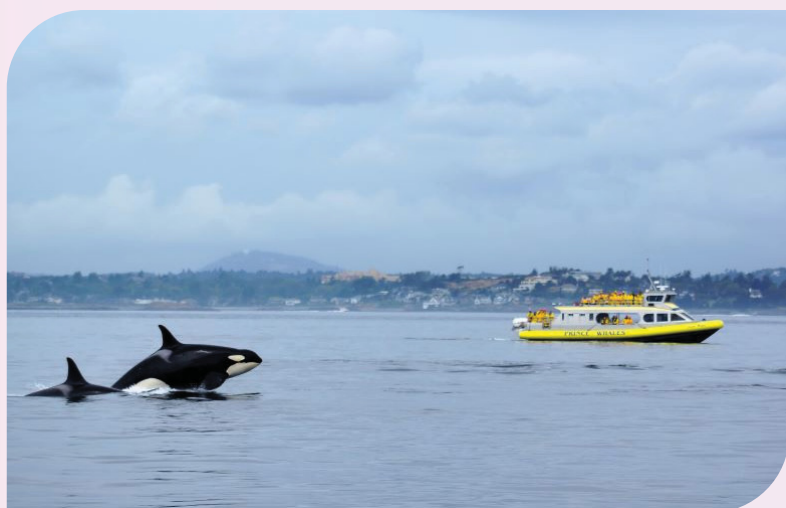
हमने एक सप्ताहांत के दौरान नियाग्रा फॉल्स का दौरा किया। यह दुनिया के आश्चर्यों में से एक है। यह सचमुच एक शानदार दृश्य है। कनाडाई हिस्से में झरना घोड़े की नाल के आकार का है। नाव हमें झरने के बहुत करीब ले गई। और हमने सफेद झाग वाले पानी के साथ आकर्षक झरना, पानी की फुहार से बनी धुंध, नीचे गहरी हरी नदी और आकाश में सुंदर इंद्रधनुष देखा। यहाँ से अमरीकी सीमा देखी जा सकती है। यहां रेनबो ब्रिज कनाडा और अमेरिका को अलग करता है। रात के दौरान लाइट शो और आतिशबाजी बहुत अद्भुत था।



नियाग्रा में हमने “बनाना लीफ” नामक एक रेस्तरां, जो दक्षिण भारतीय चेटीनाड व्यंजन पेश करता है, में स्वादिष्ट डोसा, वड़ा और दही चावल खाया। शाम को हमने “पराठे वाली गली” नाम की जगह पर पराठे खाए। उनके पास लगभग 100 अलग-अलग प्रकार के पराठे थे। हम अद्भुत यादों के साथ अपनी बेटी के घर लौट आए।

हमारी बेटी और दामाद हमें कुछ दिनों के लिए वैंकूवर भी ले गए। यह ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत में है और समय में टोरंटो से 3 घंटे पीछे है। हवाई जहाज से, टोरंटो से लगभग 5 घंटे लगते हैं। हमने वैंकूवर को बेहद खूबसूरत पाया। सुंदरता में इसकी तुलना भारत के कश्मीर से की जा सकती है। यह एक बंदरगाह है और पहाड़ों से भी घिरा हुआ है। एक समय में, हम लोगों को एक ही स्थान पर स्कीइंग, साइकिलिंग, ट्रेकिंग, तैराकी और बोटिंग करते हुए देखा। हमने वैंकूवर के डाउनटाउन का दौरा किया और एक विशाल घड़ी देखी, जिसमें से सवा घंटे, आधे घंटे और पूरे घंटे पर भाप निकलती थी। आइसक्रीम पूरे कनाडा में प्रसिद्ध है। हमने वैंकूवर में अर्नेस्ट आइसक्रीम और काउज़ आइसक्रीम में स्वादिष्ट आइसक्रीम खाई।

वैंकूवर में हम प्रिंस ऑफ वेल्स नामक नाव में व्हेल देखने भी गए। हमारी नाव समुद्र में दूर चली गई। ड्राइवर और यात्रा के अन्य एजेंट हमें उस जगह ले जाने की पूरी कोशिश की जहां पहले व्हेल देखी गई थी। हमें बहुत खुशी हुई कि हमें हंपबैक



व्हेल बहुत नज़दीकी से देखने को मिली। हमने सी लॉयन्स और ओर्कास/किलर व्हेल भी देखी। कुल मिलाकर यह कनाडा में हमारा सबसे यादगार अनुभव था। कनाडा में अपने शेष दिनों के दौरान हमने टोरंटो और उसके आसपास के स्थानों का दौरा किया। टोरंटो, ओंटारियो प्रांत की राजधानी है। यह एक प्रमुख कनाडाई शहर है और यहाँ कई हरे-भरे स्थान, वॉकिंग ट्रेल, शेल सुविधाएं और चिड़ियाघर हैं। डाउनटाउन टोरंटो में हमने सी.एन टावर नामक सबसे ऊँचा टावर, सेंट लॉरेंस मार्केट और द्वीपों में से एक द्वीप देखा।

लगभग सभी महत्वपूर्ण आईटी कंपनियों के कार्यालय यहाँ हैं। यहाँ एक मेट्रो रेल है जो भूमिगत चलती है और सभी इमारतों को जोड़ती है ताकि लोगों को सर्दियों के दौरान बाहर जाने की जरूरत न पड़े और वे स्टेशन से ही अपने कार्यालय जा सकें। वहाँ एक एस.बी.आई शाखा और एक टीसीएस कार्यालय भी था।

कनाडा में जो आश्चर्यजनक चीज़ हमें देखने को मिली वह थी, सरकार और लोगों द्वारा पर्यावरण को दिया जाने वाला महत्व। सरकार हरियाली को नष्ट कर अत्यधिक भवन निर्माण की इजाजत नहीं देती। वन्यजीवों को बहुत सावधानी से संरक्षित किया जाता है और उनके रखरखाव के लिए सख्त कानून भी हैं।

हमारी यात्रा कुछ ही समय में समाप्त हो गई और हम चिरस्थायी यादों के साथ भारत लौट आए।

तनाव के प्रति स्वस्थ प्रतिक्रिया

डॉ कल्पना वर्मा

वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना



कुछ दिनों पहले की बात है। मैं अपने एक मित्र के घर गई थी। वहाँ मेरी मुलाकात उनके 07 वर्षीय पुत्र से हुई। बहुत ही प्यारा और मासूम बच्चा, जिसके चेहरे से नूर टपक रहा था। मेरा स्वभाव है कि मैं बच्चों को थोड़ा समय देती हूँ जिससे वे अंजान व्यक्तियों के साथ अपने-आप सहज महसूस कर सकें, और यही प्रक्रिया मैं दूसरों के बच्चों के साथ भी अपनाती हूँ। सभी बच्चों की तरह वह बच्चा भी मुझसे थोड़ा संकोच महसूस कर रहा था, कुछ भी बोलने से डर रहा था, पर जैसे-जैसे वह अपने माता-पिता के साथ मेरे मैत्री भाव का आंकलन कर रहा था, धीरे-धीरे सहज होता चला गया। बच्चों को जबर्दस्ती अपने पास बुलाने पर वे दूर भागने लगते हैं, इसलिए मैं ऐसा कभी नहीं करती। शालीन बच्चों की तरह वह मेरे पास आया और जल-पान में अपनी रुचि दिखाई। फिर धीरे-धीरे अपने खिलौने भी मुझे दिखाने लगा और फिर अपने पसंदीदा कार्टून चरित्रों के बारे में बात करने लगा। मैं भी उसके पसंदीदा कार्टून चरित्रों की आवाज़ें निकालकर उसका मन बहला रही थी। फिर कुछ देर बाद मैंने उससे पढ़ाई के बारे में पूछा। अचानक से उसकी भाव-भंगिमाएँ ही बदल गई। मैं उसके भाव कुछ-कुछ समझने लगी। उसका चेहरा लटका हुआ था। मैंने पूछा, “पढ़ना अच्छा नहीं लगता?” उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने फिर पूछा, “तुम्हारा फ़ेवरेट सब्जेक्ट कौन सा है?” उसका धीरे से उत्तर आया, “ड्रॉइंग”। मैंने बोला यह तो बहुत ही अच्छी बात है, पर उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं जताई। फिर मैंने पूछे कि बाकी विषय क्यों अच्छे नहीं लगते? वह कुछ देर तो चुप रहा। फिर बिना कुछ बोले अपने कमरे के अंदर चला गया। मैं अपने मित्र और उनकी पत्नी से बात करने में पुनः व्यस्त हो गई। उनके द्वारा खाने का अनुरोध प्राप्त होने पर हम सभी खाने के लिए बैठ गए।

वह बच्चा फिर कमरे से बाहर आया तथा उसके हाथ में एक स्केच बुक थी। उसने बड़ी ही उत्सुकता से अपनी स्केच बुक के पृष्ठ पलटने शुरू किए और मुझे ऐसे लगा कि मैं रंगों की एक अद्भुत दुनिया में प्रवेश कर चुकी थी.....ऐसी रंग-बिरंगी दुनिया जिसमें नीले आसमान में गुलाबी रंग भी घुला हुआ था, काले पंछियों की लाल-लाल चोंच भी दिख रही थी, हरी घास पर क्षण भर बैठ जाने का मन करने लगा.....ऐसी दुनिया जिसका सपना अक्सर माता-पिता अपने बच्चों को दिखाते हैं। कुछ ही पृष्ठों के बाद उसकी कलाकारी का पैटर्न बदलने लगा। अचानक से रंग-बिरंगी दुनिया काली-सफ़ेद दुनिया में बदलने लगी। सारी कृतियाँ निराकार नज़र आने लगी। मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा था जैसे वह अपने चित्रों के माध्यम से बहुत कुछ कहना चाहता हो। मैंने उससे इस विषय पर बात करना चाहा। मैंने पूछा कि उन चित्रों के माध्यम से वह क्या कहना चाहता था? उसने कहा। “ये सब चित्र मैंने बहुत पहले बनाए थे। अब मैं कोई चित्र नहीं बनाता। अगर चित्र बनाता हूँ तो मेरी पढ़ाई छूट जाती है जिसके कारण मुझे बहुत टेंशन होता है। “मैं तो बस



उसकी बातें ही सुनती रह गई। इतने छोटे बच्चे को टेंशन? मेरे कुछ ज्यादा पूछने से पहले ही बच्चे के माता-पिता ने उसे कमरे में जाकर पढ़ने का आदेश दिया।

“माफ़ कीजिए, बहन.... यह बच्चा बहुत शरारती है। देखिये ना, आपको ठीक से खाने भी नहीं दे रहा।” उसकी माता ने कहा।

“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। आपका बच्चा बहुत प्यारा है और हुनर वाला भी। आपको तो इसकी पेंटिंग्स देखकर गर्व होता होगा....कितनी रंग-बिरंगी और सुंदर बनाता है।” मैंने कहा।

अचानक बीच में ही मेरी बात को टोकते हुए उसके पिता ने कहा, “सारा दिन इसी में लगा रहता है। पढ़ाई में इसका दिल नहीं लगता। पिछली तिमाही में 10वीं स्थान पर भी नहीं था। हर महीने पंद्रह हजार रुपये फीस भरते हैं और साहबज़ादे केवल पेंटिंग्स बनाते हैं।”

सच मानिए, मैं तो अपने मित्र को बस हैरानी से देखती रह गई। मेरा चेहरा भाव विहीन हो चुका था, पर मन में प्रश्नों और सुझावों का समुद्र उमड़ रहा था। मैं उसकी किसी भी बात से सहमत नहीं थी। इतने छोटे बच्चे पर पढ़ाई का इतना दबाव ठीक नहीं लगा मुझे। यह मानती हूँ कि सभी अभिभावकों को अपने बच्चों के भविष्य की चिंता होती है और अच्छी शिक्षा ही सफलता की पहली सीढ़ी है। आजकल स्कूल की फीस भरने से भी ज्यादा स्कूल में दाखिला करवाना मुश्किल होता है। ऐसी विडम्बना होती है कि बच्चे का दाखिला करवाने से पहले माता-पिता का साक्षात्कार होता है। स्कूल में एडमिशन कराने के लिए माता-पिता का व्यवसाय, उनकी आय, उनकी शिक्षा, आदि सभी पहलुओं की समीक्षा के पश्चात ही बच्चों को दाखिला मिलता है। जिस शिक्षा पद्धति की शुरुआत ही इतने तनाव से हो, उस शिक्षा के पूर्ण होते-होते न जाने अभिभावकों एवं उनकी संतानों को किस-किस प्रकार के तनाव से गुज़रना पड़ता होगा।

आजकल हर दूसरा व्यक्ति तनाव से पीड़ित हैं। लोग छोटी-छोटी बातों के बारे इतना सोचते हैं कि अन्य जरूरी बातों पर उनका ध्यान ही नहीं जाता है। कभी-कभी तो ऐसी बातों का तनाव लेते हैं कि दूसरा व्यक्ति शायद उस बात पर हँस पड़े। लोगों को ऐसा लगता है कि दुनिया में उनकी परेशानी से बड़ी कोई परेशानी नहीं है। उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि भूख, दर्द, विकलांगता, गरीबी, बीमारी और ना जाने क्या-क्या इस दुनिया में विचारणीय विषय हैं जिसके आगे उनकी परेशानी शायद कुछ भी ना हो। अक्सर लोग यह कहते पाये जाते हैं कि ‘ऐसा मेरे साथ ही क्यों घटित होता है?’ वे भूल जाते हैं कि कुछ घटनाएँ सभी के जीवन में सामान्य होती हैं बस दूर से देखने से यह लगता है कि अन्य लोगों की ज़िंदगी कितनी



खूबसूरत है। हर व्यक्ति के जीवन में तनाव के अलग-अलग पड़ाव होते हैं। लोग छोटी-छोटी बातों का इतना तनाव लेते हैं कि बाद में मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, मोटापा आदि बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। अपने इस तनाव का 'बैगेज' लोग अपने बच्चों को भी पास करते हैं। छोटी-सी उम्र में ही उन पर दूसरे बच्चों के साथ प्रतिस्पर्धा का 'बैगेज' डाल देते हैं। तनाव इंसान के जीवन का एक हिस्सा हो सकता है पर सम्पूर्ण जीवन का अभिन्न अंग नहीं हो सकता। कभी-कभी तनाव व्यक्ति को किसी काम को पूरा करने के लिए भी प्रेरित कर सकता है। इसलिए, तनाव होने पर भी सकारात्मकता का हाथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए। यहां तक कि गंभीर बीमारी, नौकरी छूटना, परिवार में मृत्यु या किसी दर्दनाक घटना को जीवन की स्वाभाविक घटनाएँ मानकर जीवन में दूसरे विकल्पों को तलाशना बहुत आवश्यक होता है। आप उदास या चिंतित महसूस कर सकते हैं, और यह कुछ समय के बाद सामान्य भी हो जाता है।

तनाव से बचने और अपनी अगली पीढ़ी को बचाने के लिए किसी बड़े उपाय की ज़रूरत नहीं होती है। छोटे-छोटे कदम ही हमें हमारी खुशियों की ओर ले जाते हैं। मनुष्य को वे चीज़ें करनी चाहिए जिनको करने में आनंद आता है। हर व्यक्ति की कोई न कोई रुचि अवश्य होनी चाहिए चाहे वो कला से जुड़ी हो या संगीत से, ज़मीन से जुड़ी हो या आसमान से, घूमने से जुड़ी हो या बगानी से, ये रुचि ही उसके आध्यात्म की पहली सीढ़ी होती है। प्रकृति से जुड़े रहने पर आधी समस्याएँ खत्म हो जाती है। जब भी तनाव आपको बुरा महसूस कराता है, तो कुछ ऐसा करें जिससे आपको अच्छा महसूस हो, भले ही केवल 10 या 15 मिनट के लिए। नियमित रूप से व्यायाम करने से स्वास्थ्य रूपी समस्याएँ भी कम हो जाती है। कहते हैं न कि एक स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मन का वास होता है। छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना होता है जैसे समय पर सोना-उठना, खाना-पीना, फल और साग-सब्ज़ी खाना, पानी पीना इत्यादि। आजकल के इस तनाव भरे जीवन में लोग छोटे-छोटे अंतराल पर पानी भी पीना भूल जाते हैं, जिससे अन्य कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। तनावपूर्ण स्थिति से बचना या किसी समस्या से बचना हमेशा संभव नहीं होता है, लेकिन आप जो तनाव महसूस कर रहे हैं उसे कम करने का प्रयास कर सकते हैं। कुछ स्थितियों को बदलना हमारे हाथ में होता है और कुछ नहीं। इसका अभिप्राय यह है कि किसी भी स्थिति में तनाव उत्पन्न हो सकता है, परंतु उसके साथ हमारा व्यक्तित्व किस प्रकार जूझता है यह हमारे हाथ में होता है। अपनी सकारात्मक ऊर्जा से ही हम इसका सामना कर सकते हैं। अपनी रेखाओं से ज्यादा हमें अपने आत्मबल पर विश्वास रखना ही होगा। आदर्शलोक जैसा इस दुनिया में कुछ भी नहीं।



महिला सशक्तिकरण

श्री विजय कुमार शुक्ल

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद



प्राचीनकाल में भारत में नारी का स्थान बहुत ही ऊँचा था। वह पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में पुरुष की सहभागिनी होती थी। प्राचीन भारतीय नारी पूर्ण स्वतंत्र होती थी। उसे स्वयंवर अर्थात् स्वयं पति चुनने का पूर्ण अधिकार होता था। उसे पुरुषों के समान सभी अधिकार प्राप्त थे। शिक्षा के क्षेत्र में पुरुषों से किसी मायने में कम नहीं थी। अपाला, गार्गी इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। महाभारत काल में नारी पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों को संचालित करती थी। मनुस्मृति में यहाँ तक कहा गया है- “यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता।” अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। यहाँ पूजा से तात्पर्य उनकी मान-मर्यादा की रक्षा से है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीनकाल में भारत में नारी का पद प्रतिष्ठापूर्ण था।



लेकिन मध्यकाल में पृथ्वीराज चौहान की पराजय के उपरान्त मुस्लिम आक्रमणकारियों का भारत पर आधिपत्य हुआ। देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ स्त्रियों की स्वतंत्रता का भी अपहरण हुआ। यथा राजा तथा प्रजा वाली उक्ति चरितार्थ हुई। समाज की घृणित विचारधारा ने स्त्रियों को पुरुषों की बराबरी के पद से हटा दिया और उनका स्थान गौण कर दिया। धीरे-धीरे नारी पुरुष की सहचरी से भोग्या होती चली गई। एक प्रथा के अनुरूप उन्हें पर्दे में रहना अनिवार्य हो गया। पर्दा प्रथा ने उनसे शिक्षा एवं अन्य अधिकार छीन लिया।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि मध्ययुगीन भारतीय नारी पुरुष की भोग्या और सेविका मात्र रह गई जिसके लिए राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने कहा कि –

‘अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध, आँखों में पानी ॥’

20वीं और 21वीं सदी में भारतीय संविधान में नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए। कानून की दृष्टि से अब नारी अबला नहीं सबला है। पुरुष जगत का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट हुआ कि नारी भी विश्व जगत का उतना ही आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग है जितना की पुरुष, वह पुरुष की वासना तृप्ति का एक साधन मात्र नहीं है बल्कि वह जननी, सहचरी एवं मार्गदर्शिका भी है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक तरक्की को बढ़ावा देने से है। महिला

सशक्तिकरण द्वारा सरकारी और निजी क्षेत्रों में महिलाओं के रोजगार को बढ़ावा देना लैंगिक असमानता को दूर करने से है। आसान भाषा में हम कह सकते हैं कि महिलाओं को पुरुष के समान स्वतंत्र रूप से खुद के निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करना ही महिला सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण द्वारा ही हम बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं। इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा नारी शक्ति को जगाने के लिए हर साल दुनिया भर में 8 मार्च को 'विश्व महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है। हर साल महिला सशक्तिकरण पर नारियों को उत्साहित करने के लिए एक नया थीम दिया जाता है। वर्ष 2024 में इसके लिए थीम है - 'महिलाओं में निवेश करें: प्रगति में तेजी लाएं'।

हमारे देश में महिला सशक्तिकरण के खराब प्रदर्शन का मुख्य कारण लिंग असमानता है। वर्ष 2023 की वैश्विक मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार हमारा देश 146 देशों की सूची में लैंगिक असमानता सूचकांक में 127वें स्थान पर है जो एक दयनीय स्थिति है। खासकर अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति /अल्पसंख्यक महिलाओं को उच्च जाति की महिलाओं की तुलना में अधिक शोषण, भेदभाव और सीमित रोजगार के अवसर मिलते हैं। लैंगिक समानता तथा महिला सशक्तिकरण दोनों ही विकास और उच्च आर्थिक स्थिति को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण रणनीति है।

महिलाओं को सशक्त करने के लिए भारतीय संविधान में अनेक महत्वपूर्ण उपबंध किए गए हैं। जैसे -

- अनुच्छेद 14 : विधि के समक्ष समता और विधि का समान संरक्षण।
- अनुच्छेद 15 (1) : राज्य धर्म, जाति, मूलवंश, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर राज्य किसी नागरिक से विभेद नहीं करेगा।
- अनुच्छेद 15 (3) : राज्य स्त्रियों और बालकों के लिए विशेष उपबंध कर सकता है।
- अनुच्छेद 16 (2) : राज्य में नियोजन या पद के संबन्ध में धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, उद्भव, जन्म स्थान या निवास स्थान के आधार पर किसी को अपात्र नहीं मानेगा।
- अनुच्छेद 21 ए : 6 से 14 वर्ष तक के सभी बालकों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का उपबंध किया गया है।
- अनुच्छेद 23 : मानव दुर्व्यापार और बालाश्रम को प्रतिषेध किया गया है।
- अनुच्छेद 24 : 14 वर्ष से कम उम्र के बालकों को कारखानों या संकटमय नियोजन पर प्रतिषेध किया गया है।
- अनुच्छेद 39 (क) : पुरुष तथा स्त्री दोनों की जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार दिया गया है।
- अनुच्छेद 39 (द) : पुरुष/ स्त्री को समान कार्य के लिए समान वेतन की बात की गई है।
- अनुच्छेद 42 : प्रसूति सहायता का उपबंध किया गया है।

अनुच्छेद 51अ : यह उपबंध किया गया है कि भारत का प्रत्येक नागरिक का यह मूल कर्तव्य होगा कि वह ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हो।

अनुच्छेद 325 : धर्म, मूलवंश, जाति या लिंग के आधार पर कोई भी व्यक्ति निर्वाचन नामावली में नाम दर्ज किए जाने हेतु अपात्र न होगा।

अनुच्छेद 326 : वयस्क मताधिकार स्त्री/ पुरुष दोनों को बराबर मिला है।

अनुच्छेद 243 : ग्राम पंचायत तथा नगर पंचायत में महिलाओं के लिए 33% सीट्स का आरक्षण किया गया है।

इसके अलावा दंड प्रक्रिया संहिता तथा सिविल प्रक्रिया संहिता में अनेक उपबंध किए गए हैं। जैसे सिविल प्रक्रिया संहिता में उपबंध है कि धन की उगाही संबंधी मामले में किसी महिला को सिविल कारगर में नहीं रखा जाएगा। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 46(4) में यह उपबंध है कि - असाधारण परिस्थितियों को छोड़कर सूर्यास्त के बाद तथा सूर्योदय के पूर्व किसी महिला को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता और उसकी गिरफ्तारी किसी महिला पुलिस द्वारा ही होगी। धारा 125-128 में पत्नी, बच्चों एवं माता-पिता के भरण-पोषण से संबन्धित उपबंध दिया गया है।

विधायिका को भी बहुत सारे कानून महिलाओं के सशक्तिकरण पर बनाना पड़ा। जैसे- घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकार, 2005; मातृत्व संबंधी लाभ के लिए अधिकार और 2005 में तो संपत्ति में भी महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार दे दिया गया। अन्य अधिनियम दहेज निषेध अधिनियम 1961, सती निषेध अधिनियम 1987, घरेलू हिंसा महिला सुरक्षा कानून 2005, राष्ट्रीय महिला आयोग 1990।

विशाखा बनाम राजस्थान राज्य के बाद में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों के आधार पर विधायिका ने कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम 2013 लाई। 2012 में दिल्ली गैंग रेप के बाद जस्टिस जे. एस. वर्मा समिति की सिफारिश पर भारतीय दंड संहिता में 2013 में बलात्कारियों के लिए मृत्युदंड तक का प्रावधान किया गया है।

सिर्फ सरकार के नियम- कानून बनाने से या फिर योजनाएँ बनाने से ही महिला सशक्तिकरण नहीं होगा। इसके लिए देश और समाज के हर व्यक्ति को अपनी सोच बदलने की जरूरत है और महिलाओं को आगे बढ़ने में उनका सहयोग करने की जरूरत है। तभी जाकर वास्तविक रूप में महिला सशक्तिकरण का सपना पूरा होगा। अंत में बस इतना ही कहना चाहूँगा – सम्मान, प्रतिष्ठा और प्यार, यही है महिला सशक्तिकरण का आधार।



मध्य कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम

जे.वी.एस गंगाधर शास्त्री

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
तेलंगाना



हाल ही में, मैंने राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन संस्थान, फरीदाबाद में मध्य कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें मेरे कैरियर की सफलता के लिए महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया था। मैं आप सभी से प्रशिक्षण के अनुभवों को साझा करना चाहता हूँ।

यह प्रशिक्षण नेतृत्व, विकास, प्रभावी बातचीत, रणनीतिक सोच, ई-खरीद, स्थानीय निकायों को समझने, व्यक्तिगत उत्थान के लिए योग के महत्व और सीएजी की लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों के महत्व पर केंद्रित था।।

इसके अलावा, मैं विशेष रूप से आयोजकों द्वारा तैयार 6 दिनों की प्रशिक्षण योजना से प्रभावित था, जिसमें शारीरिक सेहत के लिये खेल भी शामिल किया गया था, इसके अलावा अक्षरधाम मन्दिर का दौरा, शांत सड़कों पर सुबह चलने का अवसर, और संस्थान के पास एक शिव मन्दिर की यात्रा, जिसने मुझे आध्यात्मिक प्रतिबिंब के लिए एक पल प्रदान किया।

मैं आयोजकों की सावधानीपूर्वक योजना और एक व्यापक प्रशिक्षण के लिये उनकी ईमानदारी से सराहना करना चाहूंगा, जो न केवल पेशेवर विकास के लिए बल्कि व्यक्तिगत कल्याण और सांस्कृतिक समृद्धि के लिये महत्वपूर्ण है। गतिविधियों के विस्तार और विचारशील चयन पर उनका ध्यान वास्तव में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के समग्र प्रभाव को बढ़ाता है।



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियां



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियां



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियां



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियां



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियां



संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियां



खुशबू

एम. जानकी दिवाकरन

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.),
तेलंगाना, हैदराबाद



मैं कौन हूँ?

मैं खुशबू हूँ!

खुशबू क्या है?

खुशबू अच्छी गंध, मधुर महक है!

जीवन में मेरा लक्ष्य महत्वाकांक्षा, प्यार, स्नेह और सकारात्मक विचार फैलाना है।

खुशबू का संबंध सिर्फ गंध से नहीं है बल्कि हमारे अच्छे कर्मों और अच्छे विचारों से है।

लोग इतने अज्ञानी हैं कि खुशबू की तलाश में निकाल पड़ते हैं,

क्योंकि वे इस बात अनभिज्ञ हैं कि सुगंध सब के भीतर है और वे स्वयं आंतरिक गंध हैं।

मानवता, सहानुभूति और संवेदना के प्रति अच्छा नज़रिया और अच्छी योग्यता ही है खुशबू।

हम किसी बाहरी चीज़ में इसे खोज रहे होते हैं, जब कि यह आंतरिक रूप से प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है, लोग बहुत मूर्ख और विवेकहीन होते हैं।

जैसा कि एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि ने कहा है 'हम उस हिरण की तरह हैं जो इस तथ्य से अनजान है कि उसकी नाभि में कस्तूरी है फिर भी वह उसी की तलाश में निकल जाता है।

मैं कौन हूँ?

मैं खुशबू हूँ!

हम दुर्गंध बर्दाश्त नहीं कर सकते क्योंकि यह हमारी इंद्रियों को परेशान करती है, लेकिन खुशबू बिल्कुल विपरीत है।

खुशबू हमेशा बनी रहती है और हम उसकी ओर अधिक चाह रखते हैं।



मैं कौन हूँ?

मैं खुशबू हूँ!

खुशबू हम सब की अच्छाई का प्रतीक है।

खुशबू की तुलना हमारे अच्छे कर्मों की जा सकती है, जिसके लिए हमें प्यार से याद किया जाता है।

खुशबू, अच्छी महक और आंतरिक सुंदरता है। इन गुण वाले व्यक्ति के चेहरे पर हमेशा एक सुंदर हार्दिक मुस्कान होगी!

मैं कौन हूँ?

मैं खुशबू हूँ!

एक दिन किसी ने मुझसे पूछा, दूर से भी आपकी खुशबू बहुत अच्छी आती है, आपने जो पर्फ्यूम लगा रखा है, वह कौन सा है?

मैंने जवाब दिया कि लगाया हुआ पर्फ्यूम महक सकता है और आपके आस-पास के लोगों को अच्छा महसूस करा सकता है।

पर यह अस्थायी है।

लेकिन आपके अच्छे कर्मों और अच्छी आदतों से जो सुगंध व्यक्त होती है वह स्थायी है और लंबे समय तक याद रखी जाती है।

यही सच्ची खुशबू है जिसे मैं समझाने की और व्यक्त करने की कोशिश कर रही हूँ।

मैं कौन हूँ?

मैं खुशबू हूँ!

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हम सभी को एक विशिष्ट उद्देश्य से बनाया है।

प्रेम और भाईचारे की खुशबू फैलाना समय की मांग है।

केवल अच्छे कर्म ही आने वाले लंबे समय तक सभी को याद रहेंगे।

मैं कौन हूँ?

मैं खुशबू हूँ!

मैं एक सशक्त महिला हूँ जो बेटी, बहन, पत्नी, और माँ है, जो अपनी मधुर वाणी से सुगंध और सुंदरता, अच्छे विचार और व्यवहार, कोमल भावनाएं, प्यार और स्नेह, एक सुंदर सी मुस्कान, सब कुछ खुशबू की एक बड़ी बोतल में समाहित कर चुकी है।

मैं इसे महसूस कर सकती हूँ और मैं धन्य हूँ! हे भगवान! मैं और क्या मांग सकती हूँ?

मैं कौन हूँ?

मैं खुशबू हूँ!

मेरी राय में खुशबू आंतरिक सुंदरता है और सौन्दर्य की मीठी महक है।

मैं सुगंध हूँ, मैं खुशबू हूँ और केवल खुशबू हूँ!!!

किताबों की महत्ता

पूजा कुमारी साव

कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना



एक छोटा सा शब्द है 'किताब', किन्तु इसका अर्थ व्यापक है, संदर्भ विविध और जीवन के संदर्भ में किताबों की महत्ता बहुत बड़ी। बचपन में हम सभी किताबों के माध्यम से अक्षर और शब्द सीखते हुए अपने ज्ञान की वृद्धि करते हैं, भाषा पर अपनी पकड़ बनाते हैं। इस क्रम में आगे बढ़ते हुए हम आ जाते हैं अपनी युवा अवस्था में जहां हम किसी विषय विशेष के प्रति ज्यादा रुचि रखते हैं। किसी की रुचि साहित्य में होती है तो किसी की विज्ञान में, किसी की भूगोल में तो किसी का इतिहास में। सभी अपने पसंद के विषय को ज्यादा से ज्यादा



पढ़ना चाहते हैं। शिक्षा के हर क्षेत्र का ज्ञान महासागर के जितना व्यापक, विशाल और अथाह गहरा है। जिस किसी को भी, किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त करना हो, इस व्यापक, विशाल क्षेत्र को जानना, समझना हो, उसकी अथाह गहराई की थाह लगानी हो तो, किताबों के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

किताबें पढ़ते हुए आप विषय का ज्ञान तो प्राप्त कर ही रहे होते हैं, किन्तु इसके साथ एक और प्रक्रिया चल रही होती है, वह है आपके विवेक के परिष्कृत होते रहने की प्रक्रिया, चेतना जागृत होने की प्रक्रिया। अध्ययन का विषय जो भी हो, किताबें पढ़ना आपकी चिंतन प्रक्रिया को जागृत करती है। चिंतन प्रक्रिया का जागृत होना कोई आम प्रक्रिया नहीं है। किताबें आपको आपके अन्तःमन और चेतन से ऐसा जोड़ती हैं, आपका विवेक इतना प्रखर हो जाता है कि आप स्वयं को समृद्ध महसूस करते हैं। समृद्धि पैसों से नहीं, बल्कि ज्ञान से, ऊर्जा से। क्योंकि ज्ञान शरीर में ऐसी ऊर्जा का संचार करता है, जिससे मनुष्य के मुख-मण्डल पर एक अलौकिक आभा नजर आती है।

किताबें धीरे-धीरे हमें समृद्ध करती हैं, तब जाकर हम ज्ञान की नदी से लेकर महासागर तक का सफर तय करते हैं। लेकिन जैसा कि हम जानते हैं महासागर की थाह लगाना आसान नहीं है, उसमें मौजूद सभी प्रकार की जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों की जानकारी इकट्ठा कर पाना एक सामान्य मनुष्य के लिए संभव तो नहीं। उसी प्रकार मनुष्य किताबों से जितना ज्ञान अर्जित कर ले, किन्तु किताबों की दुनिया भी इतनी व्यापक है कि मनुष्य कितना भी ज्ञान अर्जित कर ले कुछ न कुछ शेष रह ही जाता है। परंतु जीवन का तो आधार ही ज्ञान है। इसलिए पठन-पाठन करना, ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया में लगे रहना स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार के लिए अत्यंत आवश्यक है। अतः किताबों से दोस्ती करें, खुद को समृद्ध करें और दूसरों को भी।

आत्मिक प्रसन्नता

महाराज गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), तेलंगाना



हम सभी एक सामाजिक प्राणी हैं और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाज का गहरा प्रभाव हमारे मन व मस्तिष्क पर पड़ता है और सामाजिक दायरों, सीमाओं व बंदिशों की कड़ी से बंधे हुए होते हैं। जब एक नवजात शिशु को एक माँ जन्म देती है जो की ईश्वर का एक हस्ताक्षर है और ईश्वर ने इस महान कार्य के लिए महिला को यह शक्ति प्रदान की है और इसलिए महिला को देवी, माता, शक्ति, लक्ष्मी, ममतामयी, होम मेकर इत्यादि अनगिनत नामों से अलंकृत किया जाता है, तो वह शिशु बिल्कुल शुद्ध होता है उसके मन-मस्तिष्क में किसी प्रकार का कोई विकार (लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या, जलन, प्रशंसा, अपमान, सम्मान, सही, गलत, भय व प्रतिस्पर्धा इत्यादि) की भावना नहीं होती है। जब इस शिशु का पालन-पोषण उसके माता-पिता एवं परिवार के द्वारा आरंभ किया जाता है और वह धीरे-धीरे बड़ा होता है, चलना आरंभ करता है, अपनी तोतली आवाज में बोलना शुरू करता है तो उस बच्चे की गतिविधि (Activity) एवं आवाज सुनकर सभी लोगों को असीम खुशी व प्रसन्नता मिलती है और लोग बच्चे के साथ अपना बचपन दोबारा जीने लगते हैं। जब बच्चा थोड़ा और बड़ा होता है तो उसकी जिज्ञासा चरम पर होती है उसे सब कुछ जानने की लालसा होती है और वह प्रश्नों की बौछार अपने माता-पिता व परिवार के लोगों पर करता है जिसमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर तो हम देते हैं, कुछ को टाल देते हैं और नैतिकता का पाठ सिखाने का प्रयास करने लगते हैं कि यह सही है, यह गलत है। कभी-कभी तो उसके उल-जुलूल या अजीब प्रश्नों के उत्तर की झुंझलाहट में हम उसे डांट भी देते हैं।

फिर जब बच्चा अपने उम्र की तीसरी सालगिरह पूरी करता है तो इसके उपरान्त उसकी स्कूली शिक्षा (Schooling) आरंभ हो जाती है, नन्हे कंधे भारी भरकम बैग तले झुक जाते हैं और वह एक अनंत, असीमित व अनजान राह पर चल पड़ता है और नंबर का खेल (Marks), आगे निकलने की होड़, बहुत कम समय में ज्यादा से ज्यादा सीखने का प्रयास, प्रतिस्पर्धा व कई प्रकार के ट्यूशन इत्यादि गतिविधियों में उसका बचपन रेगिस्तान में पानी की तरह खो जाता है और वह एक मशीन बन कर रह जाता है। फलस्वरूप उसमें सामाजिक विकार का मिलावट शुरू हो जाता है और जब वह खेल एक बार आरंभ हो जाता है तो जीवन के अंतिम क्षण तक चलता रहता है बस समस्या व स्वरूप बदलते रहते हैं।



इन सारी बातों का तात्पर्य/आशय या निचोड़ यह है कि जैसे-जैसे हम बच्चे से बड़े होते जाते हैं हमारी प्रसन्नता, खुशी, आनंद, चंचलता एवं हर्ष कम होने लगती है एवं अनेक प्रकार के विकार जैसे लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या, लालच झूठ, भय, कुंठा, हीन भावना, नकारात्मक विचार, मानसिक अवसाद व तनाव बढ़ने लगती है और तब कई बार ऐसा होता है कि हमारा पूरा दिन बिना हँसी, मुस्कुराहट, ठहाके एवं शांति के बीत जाता है और अगर हँसते भी है तो नकली व बाहरी मुस्कान होती है। लोगों के चेहरे पर एक अलग सी उदासी, व्यस्तता, शारीरिक व मानसिक थकान, शीघ्रता एवं बातों में नकारात्मकता की छवि झलकती है। लोगों के पास दूसरों के लिए समय है परंतु अपने खुद के लिए समय नहीं है। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि बहुत कम ही लोग ऐसे होंगे जो एकांत में 15-20 मिनट कोई इलेक्ट्रॉनिक गैजेट, मल्टीमीडिया के बिना शून्य विचारों के साथ खुद से बात करते हुए बिता सके। कई लोग जो नौकरी करते हैं, अच्छे पदों पर हैं, कहते सुना है कि मेरे पास खाना खाने का भी समय नहीं है और वास्तव में कुछ लोग घर में खाना तैयार रहने के बावजूद भी सवेरे का नाश्ता नहीं करते हैं और जल्दी में कुछ फास्ट फूड खाकर ऑफिस या अपने कार्य पर चले जाते हैं और लंबे समय तक ऐसी दिनचर्या अपनाकर कई गंभीर बीमारियों का शिकार बन जाते हैं। अर्थात् पहले सेहत से समझौता करके पैसा कमाइए, फिर बीमार होने पर उसी सेहत हेतु कमाया गया पैसा खर्च कीजिए। अंततः न सेहत बचा न पैसा और दुनिया से अलविदा हो जाइए और मृत्यु उपरांत परिवार वाले, समाज, लोग कुछ दिन तक आपको याद रखेंगे फिर पुण्यतिथि पर याद करेंगे, फलस्वरूप भूल जाएंगे और फोटो फ्रेम में टांग दिए जाएंगे।

अगर गहराई से इस बात पर चिंतन किया जाए कि हम लोग काम क्यों करते हैं? पैसा क्यों कमाना चाहते हैं? इसकी आधारभूत जरूरत (Basic Needs) क्या है? तो इसका यह उत्तर प्राप्त होगा कि इस दुनिया में अच्छे से अच्छा व बुरे से बुरा काम करने का प्रथम एवं सर्वोपरि उद्देश्य अपना व परिवार का पेट भरना यानि भोजन हेतु किया जाता है इसके उपरांत भौतिक चीजों की चाह एवं प्राप्ति सेकेंडरी उद्देश्य होता है। कहा भी गया है कि “भूखे भजन न होई गोपाला”।

चलिए, समस्या पर बहुत बात हो गई, अब अपने शीर्षकानुसार आत्मिक प्रसन्नता हेतु कुछ बिन्दुओं पर विचार करेंगे एवं उसको आत्मसात कर काफी हद तक अपने आप को आनंदित, हर्षित, तारोताजा, व स्वास्थकर बना सकने का प्रयास करेंगे।

- (1) **जिंदगी को ज्यादा सिरियस न लें :-** हमारा अस्तित्व इस पूरे ब्रह्मांड में एक धूल कण के बराबर भी नहीं है, अतः हमें कभी भी अपनी अमीरी, शिक्षा, ज्ञान, धन, खूबसूरती, जाति, पहनावा, पद व लोकप्रियता पर घमंड नहीं करना चाहिए। इमानदारी व नीतिगत तरीके से अपने कर्म को करना है, बिना किसी फल की चिंता किए, अपने कार्य को करते हैं और सब कुछ ईश्वर के ऊपर समर्पित कर देते हैं तो आपके मन व दिल पर कोई बोझ नहीं रहता और हम आत्मिक प्रसन्नता महसूस करते हैं।
- (2) **समस्या को Let go करें :-** बहुत बार ऐसा होता है कि हमें किसी की बात बुरी लग जाती है और अनजाने में उसके द्वारा ठेस पहुंचती है या कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो किसी के प्रति नकारात्मक बात करके उसके आत्मविश्वास को हतोत्साहित करते हैं और वह बात हमारे दिमाग में अटक जाती है, क्यों बोला? कैसे बोला? मुझको ही क्यों बोला? इत्यादि सोच इतनी हावी हो जाती है कि हम अपनी पूरी उर्जा उसी सोच को जागृत करने, प्रतिक्रिया देने व बदले की भावना में खर्च कर लेते हैं और हमारा मन बेचैन एवं अत्यंत दुखी हो जाता है। अतः हमें उस बात को जाने देना चाहिए और अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए। “कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना” ये गाना याद कर मुस्कुराना है और भूल जाना है कि किसी ने क्या कहा और क्यों कहा एवं इस तरीके से आपका मन हमेशा प्रफुल्लित रहेगा।
- (3) **बदले की भावना व प्रतिस्पर्धा से बचे :-** हम सभी अपनी तुलना हमेशा अपने से ऊपर वाले के साथ करके उसके जैसा बनने का प्रयास करते हैं और असफल होने पर हीन भावना का शिकार हो जाते हैं। जबकि वास्तव में ईश्वर ने एक जैसा किसी को नहीं बनाया। सबको कुछ गुण व अवगुण के साथ पृथ्वी पर भेजा है, अतः हमें अपनी तुलना दूसरों से करने के बजाय अपने आप से करनी चाहिए। प्रत्येक दिन अपने आप को बेहतर बनाने में प्रयत्नशील होना है और यह विश्लेषण

करना है कि कल मैं कैसा था? आपने कितना अपने आपको संवारा, भविष्य में कैसा बनना है इस सोच में हम अपने आपको बेहतर महसूस करेंगे और एक आत्मिक संतुष्टि की प्राप्त होगी जो हमें खुशी, आनंद व एकाग्रता की ओर ले जाएगी।

- (4) **क्रोध, घृणा व मानसिक अवसाद से बचे :-** जब किसी की बात हमें बुरी लगती है या वह हमारे मुताबिक नहीं होती तो हमें उसपर क्रोध आता है फिर उससे घृणा व ईर्ष्या करने लगते हैं जो आगे मानसिक तनाव का कारण बनता है अतः हमें यह सोचना है कि ईश्वर ने सबको अलग बनाया है और अपने-अपने विवेकानुसार लोग बात करते हैं और उस पर किसी दूसरे व्यक्ति का नियंत्रण हो ही नहीं सकता। अतः जो बात हमें बुरी लग रही है उसकी सोच के अनुसार सही हो सकती है। इस तरह की सोच से हम दूसरों को माफ कर सकते हैं और हमारी आत्मा पर कोई बोझ नहीं रहेगा और हमेशा आनंदित महसूस करेंगे।
- (5) **अपने बचपन, चंचलता, जिज्ञासा व मासूमियत को कुछ हद तक जिंदा रखे :-** हम सभी अधिकांश लोग बड़े होने पर बहुत ज्यादा गंभीर व कड़क हो जाते हैं अपने से छोटों के साथ बैठना, बातचीत करना उनसे कुछ सीखना अपने शान के खिलाफ समझने लगते हैं। एक अहम, अहंकार का भाव मन में घर कर बैठता है और हम एकाकी जीवन जीने लगते हैं जिससे हमारे मन में अनेक प्रकार के भाव आते हैं और अशांत व बेचैन होकर अवसाद ग्रसित हो जाते हैं। अतः हमें सभी से बातचीत करते हुए हमेशा कुछ न कुछ सीखते हुए अपने शौक को, बचपन को, जिंदादिली को बरकरार रखना चाहिए इससे हमें आंतरिक खुशी मिलती है।
- (6) **भौतिक चीजों को ज्यादा तवज्जो न दें :-** हमारे जीवन की कमाई का अधिकांश हिस्सा, दिखाने के लिए भौतिक चीजों की लालसा व चाहत में खर्च करते हैं और उसमें खुशी पाने का प्रयास करते हैं लेकिन जैसे ही एक भौतिक सुख प्राप्त होता है उसकी खुशी क्षणिक होती है और हमारा मन अन्य दूसरे अनंत भौतिक चीजों की चाह में भटकने लगता है और न मिलने पर हम अशांत व बेचैन हो जाते हैं। अतः हमें यह समझना होगा कि चाहे कितना भी भौतिक चीजें जोड़ लें उसकी खुशी क्षणिक होती है। अतः हमें सामान्य व सादा जीवन अपनाकर अपनी जरूरत अनुसार छोटी-छोटी चीजों में खुशी तलाशनी है और प्रसन्न रहना है।
- (7) **जरूरतमंदों की मदद करें :-** हमें अपनी कमाई का एक छोटा हिस्सा दूसरे जरूरतमंदों की मदद में खर्च करना चाहिए। जैसे किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई पर, किसी की बिटिया की शादी पर, किसी भूखे को खाना खिलाकर एवं कुछ धार्मिक कार्यों पर परंतु इस बात का ध्यान रखना है कि उसमें आपका कोई निजी स्वार्थ लोक प्रचार (Publicity) उम्मीद व दिखावा न हो। इन कार्यों के उपरांत हमें एक अलग आत्मिक संतुष्टि मिलती है और प्रसन्नता भी।

आशय यह है कि चाहे परिस्थिति सम हो या विषम, खुशी हमारे हाथ में है और खुश रहना हमारी प्रकृति होनी चाहिए।
जय हिन्द!



“विश्व कल्याण में भारत का योगदान”

श्री देव नाथ

वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद



जब जीरो दिया मेरे भारत ने दुनिया को तब गिनती आई, तारों की भाषा भारत ने दुनिया को पहले सिखलाई ।

देता ना दशमलव भारत तो,यूं चांद पे जाना मुश्किल था, धरती और चांद की दूरी का अंदाजा लगाना भी
मुश्किल था ।

एक बार अमेरिका में भाषण देते हुए अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि हम सब भारतीयों के ऋणी हैं जिन्होंने हमें गिनती करना सिखाया, जिसके बिना कोई भी महत्वपूर्ण वैज्ञानिक खोज बहुत मुश्किल थी । विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय तक्षशिला, सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व भारत में ही निर्मित हुआ था, जो वैश्विक शिक्षा का केंद्र था । चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय भी शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र था जहां पर देश व विदेश के लोगों ने ज्ञान-विज्ञान और दर्शन की शिक्षा- दीक्षा लेकर पूरे विश्व के मानव जाति को प्रकाशित करने का कार्य किया । भगवान बुद्ध और महावीर की धरती ने दुनिया को प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ाया । भारतीय भाषा संस्कृत जिसे गीर्वाण भारती या देववाणी कहा जाता है । सभी यूरोपीय भाषाओं की जननी है और 1987 में प्रकाशित फोर्ब्स मैगजीन की रिपोर्ट में कम्प्यूटरीकृत हेतु सर्वाधिक उपयुक्त भाषा बताई गई । अंग्रेजी का "नेविगेशन" शब्द संस्कृत भाषा के "नवगत" से निकला है और नेविगेशन की कला ने आज से 6000 साल पहले सिंध नदी में ही जन्म लिया । नेवी शब्द भी संस्कृत के "नौ" शब्द से निकला है ।

भारत के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने गणना करके पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा में लगने वाले समय को बताकर विश्वकल्याण में ज्ञान- विज्ञान के दरवाजे को विश्व के लिए खोल दिया । पाई का मान निकालने का श्रेय भारत के विद्वान "बुधयान" को ही जाता है । अलजेब्रा, ट्रिगोमेट्री ज्यामितीय जैसे गणित के रूपों का जन्मदाता भारत ही रहा, इस बात को अमेरिका ने भी स्वीकार किया कि "वायरलेस कनेक्शन" के खोजकर्ता "मारकोनी" नहीं बल्कि जगदीश चंद्र बसु थे । वृक्षों में भी जीवन होता है यह बताने का श्रेय तथा उनकी गतिविधियों को मापने के लिए एक यंत्र "केस्कोग्राफ" का आविष्कार का श्रेय जगदीश चन्द्र बसु को ही जाता है । सिंचाई के लिए "रिजरवायर और डैम" सर्वप्रथम भारत में ही निर्मित हुए । प्राचीन काल से ही चिकित्सा के क्षेत्र में भारत के योगदान को कोई कैसे नकार सकता है जब आज से हजारों साल पहले मानव कल्याण के लिए धनवंतरि ने आयुर्वेद का आविष्कार किया, चरक को औषधि विज्ञान का पिता कहा गया और सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का जनक कहा गया । आज जब मेडिकल के क्षेत्र में नए-नए आविष्कार और रिसर्च हो रहे हैं और प्रतिवर्ष चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार दिए जा रहे हैं, आप कल्पना कीजिए शल्य चिकित्सा के जनक सुश्रुत ने तो कैटरैक्ट, ब्रेन सर्जरी, कृत्रिम अंग और प्लास्टिक सर्जरी जैसी मेडिकल के क्षेत्र में जटिल और दुर्लभ माने जाने वाले ऑपरेशन और इलाज को आज से लगभग 26 सौ साल पहले ही कर दिखाया जिसके लिए कई नोबेल पुरस्कार कम पड़ जाए । प्राचीन भारत से ही शरीर रचना विज्ञान, मनोविज्ञान और आनुवंशिकी के क्षेत्र भारतीयों के लिए ज्ञात थे ।

जब दुनिया की अधिकांश सभ्यताएं घुमंतू जैसा जीवन व्यतीत कर रही थी, तो लगभग 5000 साल पहले भारत ने एक नगरीय सभ्यता का निर्माण कर दिया जिसे सिंधु घाटी की सभ्यता या हड़प्पा की सभ्यता के नाम से जाना जाता है। जब दुनिया वर्ग संघर्ष और टकराव के मुहाने पर खड़ी थी, धर्म और सभ्यता को लेकर मेरा अच्छा तुम्हारा खराब की दूषित भावना से लोग ग्रसित थे, तब भारत के एक संन्यासी विवेकानंद ने 1893 के शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में "मेरे भाइयों एवं बहनों" जैसे आत्मीय संबोधन के द्वारा प्रेम और मानवता का संदेश दिया। विश्व कल्याण के लिए एक देश दूसरे देश को सहायता प्रदान करते हैं। इस मामले में तो भारत ने पूर्वी पाकिस्तान के लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए एक नए देश बांग्लादेश का निर्माण कर इतिहास रच दिया। भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने कहा था कि लोग इतिहास बनाते हैं लेकिन रणचंडी (इंदिरा गांधी) ने तो भूगोल बदल दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ के मूल संस्थापक सदस्य के रूप में वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए भारत 1950 से ही योगदान दे रहा है। गर्व की बात है कि अब तक दो लाख से अधिक सैनिकों के साथ भारत विश्व में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है और इतना ही नहीं, लगभग 168 भारतीय सैनिकों ने अपना सर्वोच्च बलिदान देते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

इस देश के एक नहीं बल्कि हजारों कोहिनूर पूरी दुनिया में फैल कर दुनिया और मानवता को प्रकाशित करने का काम कर रहे हैं। अगर एक कोहिनूर ब्रिटेन के ताज को सुशोभित करता है तो वहीं दूसरी ओर हजारों कोहिनूर जैसे माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्या नडेला, गूगल और अल्फाबेट के सीईओ सुंदर पिचाई और पेप्सिको की इंद्र नूई हो अपने अपने तरीके से विश्व कल्याण में लगे हुए हैं। भारतीय डॉक्टर, इंजीनियर और वैज्ञानिक पूरे विश्व में अपना बहुमूल्य योगदान देते हुए मानवता की भलाई में लगे हुए हैं। केवल अमेरिका में ही 38 प्रतिशत डॉक्टर और नासा में काम करने वाले 36 प्रतिशत वैज्ञानिक भारत से ही हैं जो विभिन्न कल्याणकारी मिशन को अंजाम दे रहे हैं। 2019 में जब भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया कोविड-19 जैसी महामारी से कराह रहा था तब भारत ने अपने बेहतर प्रबंधन कौशल से ना केवल अपने लोगों को राहत पहुंचाया बल्कि पूरी मानवता के कल्याण के लिए सीरम इंस्टीट्यूट और भारत बायोटेक ने अपनी क्षमता का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए वैक्सीन का निर्माण किया और भारत सरकार ने कई गरीब देशों और अपने पड़ोसियों को अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्!! उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्!!" [यह मेरा है, वह पराया है, ऐसे छोटे विचार के व्यक्ति करते हैं! उच्च चरित्र वाले लोग समस्त संसार को ही परिवार मानते हैं- का संदेश देते हुए उन्हें वैक्सीन मुहैया करवाया। यूक्रेन और रूस के बीच हुए युद्ध में भारत ने अपनी प्रासंगिक भूमिका का निर्वहन करते हुए साफ संदेश दिया है कि किसी भी मसले का हल बातचीत और कूटनीति के माध्यम से निकाला जाना चाहिए। युद्ध कोई विकल्प नहीं हो सकता भारत का स्पष्ट मत है कि- आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्, अपनी आत्मा को जो गलत लगे, वैसा आचरण दूसरों के साथ भी मत करिए और अंत में जिन पंक्तियों से हमने शुरू किया था उन्हें पंक्तियों को आगे बढ़ाते हुए उपसंहार करना चाहता हूँ "जीते हैं किसी ने देश तो क्या, हमने तो दिलों को जीता है। जहां राम अभी तक हैं नर में, नारी में अभी तक सीता हैं।

जय हिंद, जय भारत!!

गाँव की बकैती

आशुतोष राय

लेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना



भारत के गाँवों में अनेक प्रतिभाएं मिलती हैं। ऐसी ही प्रतिभाओं में सबसे अग्रणी पंक्ति में हमारे गाँव के दो भाई फेकचन्द और जगत मिसिर हैं। वैसे तो इनका वास्तविक नाम रामचन्द्र और श्यामचंद्र मिश्र है, परंतु इनके व्यक्तित्व के कारण इनका नाम बदल गया है।

रामचन्द्र मिश्र उर्फ जगत मिसिर की विशेषता यह है कि इन्हें पूरे जगत की हर बात की जानकारी है। पान में कत्थे की मात्रा से लेकर हवाई जहाज में पड़ने वाले ईंधन तक, न्यूटन के नियम से लेकर चाय में चीनी तक सब की जानकारी है इनके पास या कम से कम दावा तो यही करते हैं। इनका पढ़ाव है गाँव की शुरुआत में पड़ने वाला महुआ का पेड़। राजकुमार सिद्धार्थ पीपल के पेड़ के नीचे साधन कर गौतम बुद्ध कहलाएँ और रामचन्द्र मिश्र महुआ के पेड़ के नीचे मुँहचौरा कर जगत मिसिर कहलाएँ। श्यामचंद्र मिश्र उर्फ फेकचन्द की विशेषता यह है कि जब ये झूठ बोलते हैं या साधारण भाषा में कहें कि जब वे फेंकते हैं तो नापतौल नहीं करते हैं। पेशे से फेकचन्द वकील हैं परंतु धंधा मंदा होने के कारण अब वे अधिकांश समय लोगों के बीच ही बिताते हैं और गाँव के लोगों को इनके झूठ का दंश झेलना पड़ता है।

वैसे तो दोनों भाई जगत मिसिर और फेकचन्द में बिल्कुल नहीं पटती परंतु दोनों में एक बात को लेकर सहमति है कि अतीत में जितनी भी महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई हैं उसमें इनका और इनके पूर्वजों का योगदान रहा है। फेकचन्द के अनुसार गांधी जी को भारत छोड़ो आंदोलन के लिए उनके दादा जी ने प्रेरित किया था और ऐसे ही इंदिरा गांधी को बांग्लादेश युद्ध के लिए भी। फेकचन्द का कहना है कि उन्हें सुप्रीम कोर्ट में जज और भारत के प्रधानमंत्री, दो पदों पर बैठने का मौका मिल परंतु वे गाँव नहीं छोड़ना चाहते थे इसलिए इनकार कर दिया।

इनके व्यक्तित्व से अनजान एक व्यक्ति इनसे इतना प्रभावित हुआ कि इनकी बातों में आकर पुलिस से झगड़ा कर लिया और अभी भी जेल काट रहा है। इनके भाई सर्वज्ञाता जगत मिसिर की बात करें तो उनका यह सिद्धांत है कि सामने वाला जो कहे उसका किसी भी हाल में विरोध करना और उसे गलत साबित करना, भले उन्हें गधे को घोड़ा ही क्यों न साबित करना पड़े।

अपने कुतर्कों के दम पर जगत मिसिर ने गाँव के नौजवानों को ऐसा भ्रमित किया है कि आज भी कोई शहर जाकर कमाना नहीं चाहते। उन्होंने समझाया कि कैसे अनाज के एक दाने से दस और दस से सौ दाना बनता है और ऐसे ही आप यहीं करोड़पति बन जाएंगे।

जैसे कि जगत मिसिर का पढ़ाव गाँव कि शुरुआत में पड़ने वाला महुआ का पेड़ है। गाँव में जब कोई किसी लड़के के लिए रिश्ता लेकर आए तो सामने महुए के पेड़ के नीचे जगत मिसिर को पाए। पता पुछने पर जगत मिसिर लड़के कि ऐसी छवि बनाए कि तिलकहरू उल्टे पाँव वापस लौट जाएँ।

दोनों भाइयों की यह भी विशेषता है कि गाँव में कोई भी विकास कार्य होना हो और वहाँ ऐसा हो ही नहीं सकता कि वो अपनी एक हाथ जमीन का दावा न कर दें। फेकचंद की माने तो रूस-यूक्रेन युद्ध जिस जमीन के लिए हो रहा है वह इनके पूर्वजों की है। ये दोनों भाई जब अपनी आवाज धीमी करके सामने वाले के कान में कुछ कहने को होते हैं तो समझने वाला समझ जाता है कि कोई नया बम फटने वाला है।

दो पड़ोसियों को आपस में लड़वाने में दोनों भाइयों का योगदान अतुलनीय हैं और इसका लाभ यह होता है कि गाँव वीरान नहीं लगता और लोगों का मन बहलता रहता है। जगत मिसिर के ज्ञान में और फेकचंद के फेंकने की शक्ति में दिनों-दिन इजाफ़ा होता जा रहा है। देखते हैं इससे आने वाले समय में क्या-क्या नया बखेड़ा खड़ा होता है।

कहानी अभी जारी है.....

बकीला

जानकी नंदन

लेखापरीक्षक
कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), तेलंगाना



"अरे पनुआ ! गाय ही नहलाते रहोगे या होली भी मिलोगे ?" एक गर्वीली आवाज़ बूढ़े बरगद के नीचे गाय के ऊपर पानी डालते हुए, उतने ही बूढ़े कृशकाय पोपले से मुख वाले नंगे बदन पर धोती लपेटे, पनुआ के कान में पड़ी। तपस्वी की सी तल्लीनता भंग होने के कारण पनुआ ने सिर उठाकर देखा तो सामने रंग में सराबोर, नीचे झोल-झाल के पायजामे, जिसका असली रंग होली ने अपने प्रभाव से दबा दिया था, के ऊपर आधे बाजू की बनियान जो उनकी तोंद के ऊपर अपनी मजबूती का परिचय दे रही थी और रंगों में लिपटकर सफेद से चितकबरी हो गई थी; ऐसी वेशभूषा धारण किए अपना भारी भरकम शरीर साधे खड़े, अधपके बालों से होकर कनपटी से बहते गीले रंग को पोंछ रहे नथुआ सेठ खड़े थे। नाम तो नाथू सिंह था पर गांव की हर नाम के पीछे 'आ' की माला के उच्चारण की प्रथा के कारण नथुआ हो गए थे। सेठ क्यों और कैसे हुए इसका भेद मुझ पर बाद में प्रकट हुआ, लेकिन गांव के बड़े बुजुर्ग कहते थे कि सेठ ही हैं, तो सेठ ही कहेंगे। मेरा अपना अनुमान था कि शायद यह सम्मान उन्हें उनकी उदारता के कारण प्राप्त था। उनका शरीर भारी अवश्य था पर थुलथुला नहीं। कारण यह कि जवानी के दिनों में (वैसे तो वे अब भी अपने को जवान ही मानते थे, पर मेरी राय अलग है) वे पहलवानी करते थे। पनुआ सुबह से ही घरे में अपने पशुधन की देखरेख में व्यस्त थे। ऐसा नहीं है कि इस साधना में इतनी व्यस्तता थी कि त्यौहारों का आगमन तक न पता चले किंतु यह उनकी दिनचर्या का तय कार्यक्रम था। " नथुआ भैया ! ठहरो आते हैं", कहकर झट से उठकर आगे बढ़े और नाथू सिंह के गले लगकर होली की मुबारकबाद दी। बदन पर गीला रंग नाथू सिंह की बनियान में मल दिया।

पशुधन के नाम पर पनुआ के पास एक गाय और गाय की बछिया थी। उन पर यह सत्य प्रकट हो चुका था कि प्रत्येक जीव में ईश्वर का वास होता है, तिस पर जो पशुधन उनका व उनके परिवार का पालन पोषण करता है, वह तो साक्षात विष्णु स्वरूप ही है और उसकी सेवा शुश्रूषा करना उनका धर्म। पनुआ यों तो अधिक पढ़े लिखे नहीं थे पर जीवन के अनुभव, संतों के संग और स्वाध्याय ने उन्हें दार्शनिक कर दिया था।

दरअसल, पनुआ के परिवार में दो बेटे, एक बहू और एक नातिन थी। पत्नी का देहांत तीसरी संतान के जन्म के समय हो गया था। पनुआ अपनी तीसरी संतान, जो कि पुत्री थी, से सर्वाधिक स्नेह रखते थे, उन्हें लगता था कि बचपन में उनकी पत्नी का चेहरा माथा उनकी पुत्री जैसा ही रहा होगा। तात्पर्य यह कि प्रेम तो पत्नी से था, परंतु पुत्री से वात्सल्य, पत्नी के गमन ने प्रगाढ़ किया था और जब समय उस पुत्री को भी खा गया, तो पनुआ दार्शनिक हो गए। जिस समय व परिवेश में प्रेम विवाह कल्पना की बात थी, ऐसे में दूसरे जाति की कन्या से गंधर्व विवाह करने का दुस्साहस करने वाले पनुआ को भला कौन नौजवान अपना आदर्श न मान लेता ? मैं भी उन्हीं नौजवानों में से एक था।

पनुआ के छोटे पुत्र से मेरी गाढ़ी मिलता थी। उनका छोटा पुत्र, जिसका नाम योगेश था, गांव के लोग वकील बुलाते थे।

गांव की प्रथा और उच्चारण की प्रवृत्ति ने उसका नाम बकीला कर दिया था। बाकी घर से मेरा उतना ताल्लुक नहीं था क्योंकि बकीला और उसके भाई में करीब 16 वर्ष का अंतर था। बकीला मेरे बचपन का दोस्त था, और पनुआ मेरे ताऊ लगते थे। जब हम बड़े हुए तो पढ़ने के लिए बकीला को शहर भेजने की बात, मेरे पिता ने पनुआ के सामने रखी। पनुआ ने सुझाया कि मैं और बकीला दोनों शहर भेजे जाएं और एक साथ रहकर पढ़ाई करें। मेरी पढ़ने में उतनी रुचि नहीं थी। पनुआ को जब यह बात पता चली तो उन्होंने मुझे बुलाया और समझाने के भाव से बोले कि लल्ला! गांव का कोई बालक तो आगे बढ़े। तुम्हारी इच्छा पढ़ने की नहीं है, न सही। शहर जाकर कुछ अच्छा ही सीखोगे आदि आदि। फिर उन्होंने दार्शनिक होते हुए कहा, "लल्ला! जीवन में मित्र का संग और पढ़ने का अवसर कभी न खोना चाहिए और तुम्हें तो दोनों एक साथ मिल रहे हैं।"

पनुआ ताऊ की दूसरी बात में मेरी दिलचस्पी नहीं बैठी, परंतु पहली बात मुझे हितकर लगी। मित्रता ही संसार में सबसे सच्चा संबंध है, मित्रता ही हमारे द्वारा चुना हुआ निश्छल भाव। मित्र ही एक ऐसा होता है जिससे हम सुख-दुःख की बात बिना सोचे समझे, बिना भय और ग्लानि के कह देते हैं। संसार में जो प्रेमिका के प्रेम से वंचित है वह उससे कम अभागा है जिसे सच्ची मित्रता के सुख से विधाता ने वंचित कर दिया है।

मैं और बकीला शहर रवाना हो गए। वह मेधावी था, मैं भौंदावी। वह सहज ही अव्वल दर्जे में पास होता, मैं जैसे तैसे घिसटता, रेंगता अगले दर्जे में पहुंचता। विज्ञान से स्नातक होते ही मैंने साहित्य की शरण ली और बकीला ने चिकित्सा का क्षेत्र चुना। बकीला ने नर्सिंग सीखने के लिए शहर के एक कॉलेज में ही दाखिला ले लिया। उसकी प्रतिभा; मार्गदर्शन के अभाव और धन की तंगी का शिकार हो गई और बकीला कोई डॉक्टर न बनकर नर्स की भांति एक बड़े हस्पताल में नौकरी करने लगा। दो-तीन महीने में कुछ दिन छुट्टी लेकर गांव आता और लोगों की छोटी मोटी तकलीफों को दूर करने की दवाइयां साथ लाता।

समाज, परिवार और अपने परिवेश की उम्मीदों पर खरा उतरने की भरसक चेष्टा करने में मनुष्य स्वयं को भूल जाता है। वह महान बनने का असफल प्रयास करने में लग जाता है, ऐसे मनुष्य विरले ही होते हैं परंतु जितने भी होते हैं वह बहुत विख्यात हो सकें या नहीं लेकिन अपने आस-पास के लोगों में प्रचलित अवश्य हो जाते हैं। उनमें से कोई कोई तो मंडेला, ईश्वरचंद्र विद्यासागर या लिंकन भी हो जाता है। बकीला भी इसी श्रेणी का था। कभी उसे खबर होती कि फलां गांव में अमुक व्यक्ति बीमार है तो खाना छोड़ उठ जाता और साइकिल से ही चल पड़ता। इक्के की बाट न जोहता। उसके इस श्रम का यह परिणाम था कि गांव की नाम बदलने की प्रथा में वह अपवाद हो गया और डॉ योगेश कहकर पुकारा जाने लगा। फिर भी वह मुझसे कड़े शब्दों में कहता कि मैं उसे बकीला कहकर ही संबोधित करूं। अपनी स्थिति का उसे भान था और उसे बदलने का भरसक श्रम करने में उसने खुद को खपा दिया था।

बकीला कोई बड़ा डॉक्टर नहीं था, लेकिन गांव के लोगों के लिए वह किसी बड़े डॉक्टर से कम भी नहीं था। एक बार, जैसा सीमित संसाधनों से युक्त समाज में होता है, गांव में डेंगू का प्रकोप हुआ। यह बीमारी उतनी खतरनाक नहीं होती, लेकिन तभी जब लापरवाही न बरती जाए। गांव के दो चार घरों में मातम ने पैर पसारने शुरू किए तो ओहदेदारों और अखबारों को खबर हुई। लेकिन तब तक हर घर में चारपाई बिछ गई थी। टीम ने चक्कर लगाने शुरू कर दिए थे।

बकीला को जब खबर हुई कि उसके जन्मस्थान पर संकट आया है, तो उसने हस्पताल से विदा और दवाईयों का जखीरा

लिया और अपना डेरा गांव में ही डाल दिया। उस समय उसने कई जानें बचाई, लोग उसे देवता मानने लगे और वह उस वृक्ष की भांति हो गया जिसकी डालियां फल लदने से झुक जाती हैं। मेरे परिवार में उस बीमारी से चार सदस्य ग्रसित हुए, मेरे चाचा, मेरा भाई और उसके दोनों बच्चे। बकीला यथा समय आता, दवाएं और हिदायत देता, थोड़ी इधर उधर की बातें करता और चला जाता। उसके बात करने की शैली से लगा कि उसके हृदय में कुछ है जो वह छिपा रहा है। परंतु मेरे भीतर छिपे साहित्यकार ने भांप लिया और मैंने यह सोचकर बात को कुछ समय के लिए मन में रोक लिया कि अभी समय ठीक नहीं है।

जब बीमारी का कोप शांत हुआ तो मैं एक दिन पनुआ ताऊ के यहां पहुंचा, उनसे बात ही बात में पूछा कि "ताऊ! आपको नहीं लगता कि बकीला कुछ बुझा बुझा रहता है?" पनुआ ताऊ भी इस बात को सुनकर चकित न हुए और बोले "लल्ला! बात तो मेरी भी समझ में नहीं आती कि क्यों यह इतना उदास है और पूछने पर कुछ कहता नहीं बस हंसकर टाल जाता है।"

"तो इसका क्या हल होगा?" मैंने अनुभवी उत्तर पाने की आशा में पनुआ ताऊ की ओर ताका।

"हल वल कुछ नहीं, उम्र का फेर है।" उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

"बात कुछ भेजे में घुसी नहीं ताऊ" मैंने सहज भोलेपन से कहा।

पनुआ रहस्यमई तौर पर मुस्कुराए और एक उच्छवास के साथ बोले और क्या बोले! कहने लगे कि व्यक्ति को बीच-बीच में समय निकाल फूट-फूट कर रो लेना चाहिए, मन का गुबार निकल जाए तो अच्छा रहता है। बिछड़े हुआ का दुःख सबसे बड़ा दुःख होता है, गए समय का दुःख उससे भी बड़ा होता है। यह बात मायने नहीं रखती कि गए दिनों में हम सुखी थे कि नहीं, उन दिनों का दुःख भी सीने से लगा कर रखने का होता है। मन में जो हिलोरें किसी को देख कर उठ जाती हैं, आंखों को जिसे देखकर ठंडक पड़ती हो, जिसके मिलने पर छाती जुड़ती हो ऐसे इंसान को हर मोल देकर अपने नजदीक रख लेना चाहिए। चाहे किसी की दुआ लगे या बहुआ, चाहे कोई चीज टूटे या कुछ और हो, नहीं तो फिर जीवन भर क्षोभ रहता है जिसकी टीस रह-रह कर कलेजे में उठती है और छाती चीर जाती है। इससे पहले मैं कुछ और पूछता, बकीला ने घर में प्रवेश किया और कृत्रिम मुस्कुराहट से मेरी ओर देखा। पनुआ ने आंख के इशारे से मुझसे कहा कि मैं बकीला से पूछूं कि आखिर माजरा क्या है? और वह उठकर बैठक में चले गए।

"आओ बकीला, कहां गए थे?"

"अरे जहानपुर के चौबे की लड़की है विनती, उसकी तबियत कुछ ठीक नहीं थी सो वहीं से आते हैं।" कमीज उतारते उतारते ही बकीला ने जवाब दिया।

"कौन ऊ बिंतिया? टांड सी ऊंची, ये विनती फिनती क्या है भईया?" बकीला झोंप गया और मेरे भीतर बैठा साहित्यकार चुटकी काटकर मुस्कुराया।

"तो डॉ साहब को डॉक्टरनी की जरूरत है!" एक नालायक दोस्त की तरह मैं खिखिया कर हंस पड़ा।

"अरे हम बिलकुल ठीक हैं भाई!" भाई की ई को खींचते हुए बकीला बोला।

"तो हम कब बोले बीमार हो!" और इस बार हम दोनों ही खिलखिला कर हंस पड़े। बकीला ने अपनी भतीजी को बुलाकर दो गिलास में दूध गरम कर गुड़ के साथ लाने को कहा और मेरे पास आकर चारपाई पर बैठ गया। "तो बात ये है कि डॉ योगेश रोगी

हो गए हैं, और वह भी ऐसा वैसा रोग नहीं, प्रेम रोग ने पकड़ा है और अपने मित्र को बताना भी जरूरी नहीं समझते" मैंने ताने के साथ बकीला को देखकर कहा। बकीला ने दूध का घूंट भरकर गुड़ चबाते हुए उत्तर दिया "ऐसी बात नहीं है, तुमसे कभी कुछ छिपाया है, जो अब छिपाते, बस बताने लायक कुछ है नहीं।"

"खैर! हमें बताने से क्या मतलब? ये बताओ कि बिंतिया, माफ़ करना, विनती जी को बताया?"

बकीला दुनिया भर की फुसफुसाहट से बोला, "धीरे बोलो कच्चा मेरे! मरवाओगे का?"

"काहे? पनुआ ताऊ की औलाद हो फिर भी इस मामले में डरते हो?" इस बात ने बकीला को हिम्मत दी।

दो तीन महीने बीत गए। बकीला उस दिन के संवाद के बाद प्रसन्न रहने लगा था जो इस बात का द्योतक था कि बिंतिया को अब से मुझे भाभी कहकर संबोधित करना होगा। मैं भी अपने मित्र के लिए प्रसन्न था। एक दिन नथुआ सेठ पिता जी के पास आकर बैठे हुए थे और दोनों में किसी गंभीर विषय पर चर्चा चल रही थी। चर्चा कदाचित बिंतिया के संबंध में थी और नथुआ सेठ को यह कहते हुए सुना कि "इत्ती भली लड़की है, फिर काहे मुकरते हो?" और पिता जी ने इतना कहा "विचार करेंगे."

जहानपुर हमारे गांव से अढ़ाई कोस है और वहां चौबे जी अपने कुटुंब के साथ रहते थे। घर में सुख संपत्ति में कसर न थी और ज़मीन जायदाद पुरखों के समय की बहुत थी। बिंतिया के पिता के कुटुंब में दो ही जीव थे और अगर उनकी इकलौती गाय को शामिल कर लिया जाए तो तीन। बकीला, मैं और बिंतिया गांव के स्कूल में साथ पढ़ते थे और एक दूसरे को खूब चिढ़ाते थे। तब बात बचपने की थी, अब बिंतिया हमारे ही जितनी बड़ी हो गई थी और जैसा मुझे पता था कि मेरी भाभी है।

नथुआ सेठ के जाने के अगले दिन बकीला मुझसे मिलने आया और बिगड़ कर बोला, "तुम अजीब हो भाई? जब तुम्हें पता था तो ये व्यूह क्यों रच रहे हो?" बात सिर के ऊपर से गई। मैंने बैठने का इशारा किया और कंधे पर हाथ रखकर पूछा, "क्या हुआ बकीला? क्यों गुस्से में हो?" "गुस्से में? अरे हम मार डालेंगे तुम्हें। और ये बकीला का है बे? योगेश बोलो, डॉ योगेश।" मैंने शांत भाव से पूछा कि बात क्या हुई है? तो बकीला ने बताया कि चौबे जी ने अपनी लड़की का रिश्ता, यानी हमारी भाभी यानि कि विनती भाभी जी का रिश्ता हमारे लिए नथुआ सेठ के मार्फत भेजा है और यह खबर जैसे ही विनती के द्वारा बकीला, माफ़ी! डॉ बकीला; मेरा मतलब डॉ योगेश को मिली तो वह ठीक ऐसे उफने जैसे पतीले में रखा दूध आग मिलने पर उफनता है। मैंने बकीला को आश्चस्त किया कि विनती भाभी जी हैं और भाभी जी ही रहेंगी। किंतु बकीला को बात समझ नहीं आई। "तो डॉ योगेश..." मैं आगे कुछ बोलता कि मेरे गाल पर एक हल्की सी चपत लगाकर बकीला बोला, "माफ़ी सरकार! बकीला को माफ़ कर दो।" यह घटना मेरे लिए इतनी बड़ी न थी। लेकिन बकीला को अनजाने कुछ चुभ गया था, वह क्या था मैं न समझ पाया और मेरी बकीला से बात होनी कम या लगभग बंद ही हो गई।

प्रेम में व्यक्ति अप्रत्याशित रूप से शांत, अशांत, क्रोधी, योगी और भी जो भाव और उपाधियां उपलब्ध हैं; वह सब हो सकता है। प्रेम वह उत्प्रेरक है जो भावों में मिलकर उन्हें बहुत तीक्ष्ण कर देता है और स्वयं अविच्छिन्न रहता है। बकीला के उस रूप को देखकर मुझे इस बात का गहराई से अहसास हुआ। इससे पहले बकीला को यह प्रेम रूपी उत्प्रेरक कुछ और करने की प्रेरणा देता, मैंने सब कुछ पिता जी और पनुआ ताऊ को अपनी रक्षा को दृष्टिगत रखते हुए बता देना ही उचित समझा।

जैसे ही यह बात पनुआ काका को पता चली तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया और चौबे जी के यहां से जिस माध्यम से

सवाल आया था उसी माध्यम से उसका उत्तर बकीला के लिए भिजवा दिया गया। बात तय हो गई, और खुशी खुशी बिंतिया, विनती भाभी बनकर बकीला के घर पधारीं। बकीला ने जब प्रेम प्राप्त कर लिया तो पहले से दुगने उत्साह से अपने महान बनने के श्रम में जुट गया। वह न दिन देखता न रात, न जाड़ा, न बरसात, जहां से जब भी किसी बीमार की खबर आती, वह दौड़ पड़ता।

आज के इस आधुनिक युग में जिन गांवों में मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं, बकीला जैसे लोग वहां किसी वरदान से कम नहीं हैं। पर यह वरदान चिरस्थायी नहीं है। यह वरदान कभी न कभी छीन लिया जाता है और संसार की विषमताओं का परिचय दे जाता है। बकीला का श्रम उसके स्वास्थ्य पर भारी पड़ रहा था, और एक दिन उसका अपना बदन तपने लगा। दूसरों के उपचार में माहिर बकीला ने उसे एक बुखार समझने की भूल कर दी। स्वयं ही कुछ दवाएं खाने लगा किंतु कुछ लाभ न हुआ और वह चारपाई में लग गया।

पनुआ की नातिन एक दिन दौड़कर मेरे घर आई और बोली कि चाचा आपको पुकारते हैं। मैं भाग कर गया, तो देखा कि बीमारी ने बकीला को हड्डियों का ढांचा कर दिया है। मुझे देखकर उसकी आँख से पानी की दो बूंदें ढलक गईं और उसने हाथ जोड़ लिए, मैं भांप गया और भीतर ही भीतर किसी अनहोनी की आशंका से भय के मारे मेरा कलेजा दहल गया। मन में यह विचार झलक दिखाने लगा कि बकीला तो दवाईगिरी जानता है, कुछ न कुछ करके बच सकता है। फिर अगले ही पल विचार आया कि तैराक ही डूबते हैं।

विनती भाभी पास बैठकर पंखा झल रही थीं, पनुआ ताऊ और उनका परिवार कमरे में ही था। वहां गांव भर के लोग अपने देवता के अंतिम दर्शन के लिए इकट्ठे थे, नहीं थे तो बस नथुआ सेठ। जी में आया कि इसे लेकर किसी बड़े हस्पताल में चलें किंतु बकीला के देवत्व ने नाम कमाया था, इज्जत कमाई थी, बस इतनी दौलत नहीं कमा पाया था कि शहर के महंगे अस्पताल का खर्च उठा सके। फिर भी उम्मीद की बुझती हुई लौ जब तक रौशन होती है, मनुष्य जीवन की आशा नहीं छोड़ता। जीवटता ही जीवित रहने की पहली और आखिरी शर्त है।

थोड़ी देर इसी उधेड़ बुन में मेरा मन व्यस्त रहा, और एक गाड़ी की आवाज़ से मेरी तंद्रा भंग हुई। द्वार पर देखा तो नथुआ सेठ किसी गाड़ी से उतर रहे हैं, साथ में दो बड़े डॉक्टर भी उतरे। आनन फानन में बकीला का उपचार शुरू किया गया और अस्पताल में ले जाने की तैयारी होने लगी, पर बाद में चिकित्सकीय परीक्षण ने उजागर किया कि बकीला को कहीं भी ले जाना खतरे से खाली नहीं है। चिकित्सकों ने सुझाव दिया कि वे रोज़ गांव आकर बकीला का उपचार किया करेंगे। सब लोग चकित थे कि नथुआ सेठ क्या मंत्र पढ़कर इन्हें लाए हैं? डॉक्टर रोज़ नियत समय पर आते, बकीला को देखते, दवायें सुझाते और चले जाते। बकीला की तबियत में सुधार न आता था। दवाएं बस उसके जीवन को कुछ और खींच रही थीं। आखिर में बकीला ने खीझकर दवाएं खाने से इंकार कर दिया। उसकी सांस टूटने लगी, मेरे हाथ थामकर उसने विनती की ओर देखा। मैं कांप गया और रोते हुए बकीला से क्षमा मांगते हुए कहा कि मुझसे इस पाप की आशा न करना। बकीला ने यह सुना और बीमारी को संकेत किया कि उसे खा लेगा और बकीला की पकड़ मेरे हाथों पर ढीली हो गई।

उस दिन के बाद नथुआ सेठ कहीं नहीं दिखे। उनके घर में आकर किसी और ने कब्ज़ा कर लिया था। मैं समझ चुका था कि नथुआ को लोग सेठ क्यों कहते थे।

इंतज़ार

श्री विशाल साव

कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद



ज़िंदगी बीत रही है

इंतज़ार में

हर कोई कर रहा इंतज़ार

अपने इच्छानुसार फल प्राप्ति को,

कोई कर रहा इंतज़ार, जन्म लेने को

कोई कर रहा, बड़ा होने को

बेरोजगार कर रहा इंतज़ार, रोजगार को,

एक पिता कर रहा, अपनी बेटी की ब्याह को,

रोजगार कर रहा इंतज़ार, पदोन्नति को,

घर से दूर बसे लोग कर रहें, घर के नजदीक जाने को,

प्रेमिकाएं कर रही इंतज़ार, विरह के दर्द मिटाने को ॥

जीवन के हर पड़ाव को चाहिए,

वक्त की सुझाया हो उसके पास।

इन सब के पीछे है,

सबके अपने निहित स्वार्थ।

स्वार्थ से परे,
एक जननी भी है,
जिसका इंतज़ार है सबसे भिन्न
वो करती है इंतज़ार
वक्त से घर आने को,
समय पर खाना खा लेने को,
दिनोदिन कार्य की प्रगति को,
जग में सबसे ऊँचा नाम होने को ॥

मैं मानता हूँ,
एक माँ का इंतज़ार
पहुँचाता है सुख,
क्योंकि स्वार्थपरता
इंतज़ार
होती है क्षणभंगुर,
नहीं मिटता है तो बस
माँ के प्यार का इंतज़ार ॥



लोकतंत्र और कैग

श्री खैरूल वरा

लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद



आज भारत विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था है। आज से लगभग 75 वर्ष पूर्व गुलामी की जंजीरों से बंधे हुए इस मुल्क को हमारे समस्त देशवासियों ने कभी न भूले जाने वाले अथक परिश्रम, समर्पण, बलिदान और त्याग से इसे स्वाधीनता और स्वतंत्रता दिलाई। 15 अगस्त, 1947 की सुबह मशहूर शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खान की लाल किले की प्राचीर से माधुर्य शहनाई की संगीत के साथ हमारे देश ने नई सांसें ली।

साँसें चैन की, साँसें स्वतंत्रता की, साँसें नए उमंगों की, साँसें आकांक्षाओं की। किसी बर्बर साम्राज्यवादी साम्राज्य और औपनिवेशिक ताकत की चंगुल से निकल कर

भारत एक नए परिवेश “लोकतंत्र” में प्रवेश कर रहा था।

लेकिन क्या इस नए जन्मे लोकतांत्रिक देश में लोकतंत्र की ज्वाला को अनंतकाल तक अद्यतित रखना इतना सरल था? क्या इस बात की गारंटी थी कि संविधान द्वारा निर्मित संवैधानिक, वैधानिक संस्थाएँ भविष्य में भी अपना कर्तव्य स्वतंत्र, पारदर्शिता तथा ईमानदारी से निभाती रहेगी। शायद नहीं। इसी को ध्यान में रखते हुए इस ध्येय को पूरा करने हेतु संविधान द्वारा कैग “CAG: Comptroller and Auditor General” को अनुच्छेद 148 के तहत अस्तित्व में लाया गया।

जैसा कि संविधान निर्माता श्री डॉ भीमराव अंबेडकर जी ने कहा था –

“भारतीय संविधान की उत्कृष्टता और प्रासंगिकता सबसे अधिक इसकी उत्तरदायित्व, न्याय, संदर्शिता तथा पारदर्शिता पर टिकी हुई है। बाबा साहेब की बुद्धिमत्ता और संदेश जैसा कि उनके स्वयं के वक्तव्य (कथन) से प्रतिबिंबित होता है: कुछ और नहीं वरन कैग की स्वायत्ता के संदर्भ में ही थी।

प्रस्तुत लेख में हम कैग के इतिहास, संवैधानिक स्थिति, कैग की भूमिका, स्वायत्ता, शक्तियाँ, चुनौतियाँ, अवसर एवं उपलब्धियाँ तथा सुझाव एवं सुधार की विस्तृत चर्चा करेंगे।

इतिहास:-

अगर कैग के स्वयं के अस्तित्व की बात करें तो इसकी जड़े स्वयं ब्रिटिश काल से जुड़ी हुई हैं। सन 1857 के गदर के पश्चात ब्रिटिश क्राउन ने भारत के प्रशासनिक न्यायिक समेत सारी ताकत ईस्ट इंडिया कंपनी से छीन कर स्वयं के हाथों में ले ली। तभी भारत सरकार अधिनियम 1858 में प्रथम बार कैग के पद की चर्चा की गई। विभाग का गठन सन 1860 में किया गया तथा श्री एडवर्ड ड्रमंड प्रथम महालेखापरीक्षक बने। तत्पश्चात भारत सरकार अधिनियम 1919 (मोंटागु चैल्म्सफोर्ड एक्ट) में भारत के महालेखापरीक्षक को भारत के राजस्व व्यय की समीक्षा एवं ऑडिट करने की शक्ति भी प्रदान की गई।

भारत सरकार अधिनियम 1935 में तो इसे अनंत शक्तियाँ प्रदान करते हुए सम्पूर्ण भारत का महालेखापरीक्षक बना दिया, जो सीधे ब्रिटिश क्राउन के हाथों नियुक्त किया जाना था। स्वयं ब्रिटिश क्राउन के हाथों नियुक्ति ने कैग के पद के उत्तरदायित्व और महत्ता को दर्शाया।

संवैधानिक स्थिति

26 जनवरी 1950 से लागू भारत के संविधान में कैग की महत्ता समझते हुए इसे एक संविधानिक संस्था का दर्जा प्रदान किया। भारत के संविधान के अनुच्छेद 148-151 (भाग - 5) में कैग की संरचना, कर्तव्य, दायित्व की विस्तृत व्याख्या की गई है।

अनुच्छेद 148- भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

अनुच्छेद 149- भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कर्तव्य एवं शक्तियाँ

अनुच्छेद -150 – संघ और राज्यों के लेखाओं का प्रारूप

अनुच्छेद - 151 – लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

कैग की स्वायत्ता, स्वतन्त्रता एवं कर्तव्यनिष्ठा को बनाए रखने हेतु भी कई प्रावधान किए गये जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-

- सीधे राष्ट्रपति महोदय द्वारा नियुक्ति
- तीसरी अनुसूची के अंतर्गत शपथ
- छठवीं अनुसूची के तहत जिला परिषद के खातों को राष्ट्रपति की अनुमति के साथ कैग का अनुमोदन
- वेतन एवं शर्तें (भारत की संचित निधि पर)
- उसकी प्रशासनिक शक्तियाँ और भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखाविभाग में सेवारत अधिकारियों की सेवा शर्तें राष्ट्रपति द्वारा, उनके परामर्श के बाद ही की जा सकती है।
- वरिष्ठता के मामले में कैग को सुप्रीम कोर्ट के जज के बराबर दर्जा
- कैग भारत में सरकार की लोकतान्त्रिक व्यवस्था की एक कड़ी है। अन्य कड़ियों में सर्वोच्च न्यायालय, चुनाव आयोग तथा संघ लोक सेवा आयोग हैं।
- कोई भी मंत्री संसद में कैग का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता।
- अपने पद धारण पर किसी भी सरकार (केंद्र अथवा राज्य) के अधीन किसी भी तरह का अन्य कोई पद का पात्र न होना।

कैग की भूमिका:-

- वित्तीय प्रबन्धक के रूप में - कैग भारत की संसद तथा विधायिका के वित्तीय प्रबंधन में भी एक मित्र, दार्शनिक तथा पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाता है क्योंकि कैग की ज़िम्मेदारी सिर्फ ऑडिट ही नहीं वरन सरकार के व्यय पर नजर रखने की भी है।
- अन्य संस्थाओं तथा सेवाओं के व्यय तथा पारदर्शिता को बनाए रखना।
- लोकतंत्र के पाँचवें स्तंभ के रूप में- कैग यह भी सुनिश्चित करता है कि सरकार के कार्य तथा नीतियाँ आम नागरिक के लिए कल्याणकारी हों।

कैग की अत्यावश्यक भूमिका को ध्यान में रखते हुए इसे 'आधुनिक भारत का चित्रगुप्त' भी कहा जा सकता है।

कैग की शक्तियाँ:-

संविधान के कई स्रोतों, अनुच्छेदों से कैग को कई अधिकार प्राप्त है, जैसे:-

- कैग भारत के राष्ट्रपति, राज्यपाल द्वारा अनुशंसित किए जाने पर किसी भी अन्य प्राधिकरण के खातों का भी ऑडिट कर सकता है।
- केंद्र एवं राज्य सरकारों के खाते जिस प्रारूप में होंगे, उस में भी राष्ट्रपति को सलाह देने की शक्ति।
- कैग केंद्र के खातों का विवरण स्वयं राष्ट्रपति को देता है तथा राष्ट्रपति इसे संसद के सामने प्रस्तुत करते हैं।
- वहीं राज्यो के संबंध में खातों का विवरण राज्यपाल को सौंपता है और राज्यपाल इन खातों को राज्य विधान मण्डल में प्रस्तुत करते हैं।
- तत्पश्चात संसद की प्राचीनतम समिति में से एक लोकलेखा समिति (PAC) इसकी रिपोर्ट की जांच करती है।

कैग की चुनौतियाँ:-

कार्यकाज के बदलते स्वरूप के साथ कैग की चुनौतियाँ और भी अधिक जटिल होती जा रही हैं, जैसे:-

- बढ़ता कार्यकाज – केंद्र एवं राज्य सरकार के साथ- साथ अब कैग को सार्वजनिक -निजी सहभागी (PPP) परियोजनाओं का भी ऑडिट करना होता है।
- कैग की नियुक्ति हेतु कोई मानदंड या प्रारूप का न होना।
- यद्यपि कैग को किसी भी सरकारी कार्यालय के निरीक्षण करने का और किसी भी प्रकार के खातों का विवरण मांगने का अधिकार है परंतु व्यावहारिकता में ऐसा संभव नहीं हो पाता।
- इसके अतिरिक्त ऑडिट में बाधा डालने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण दस्तावेजों की आपूर्ति ऑडिट प्रक्रिया के अंत में की जाती है।
- यद्यपि कैग का कार्यकाल 6 वर्ष का है परंतु 65 वर्ष की आयु वाली शर्त इसमें व्यावधान डालती है। यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका में कैग का कार्यकाल क्रमशः 10 तथा 15 वर्ष का है।
- आईटी एक्ट की तर्ज पर IA&AD को संवैधानिक निकाय के रूप में मान्यता देने से ऑडिट की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा IA&AD द्वारा किए गए कार्यों की विश्वसनीयता भी बढ़ेगी।

अवसर और उपलब्धियाँ:-

- अपने 75 वर्ष के अभूतपूर्व कार्यकाल में कैग ने अपनी भूमिका को सहज तरीके से संजोए रखा है। इसने न केवल सरकारी बल्कि गैर-सरकारी कार्यों, स्कीमों, एवं परियोजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार को जनता के सामने उजागर किया है। जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:-
- झारखंड में विधवा महिलाओं के आर्थिक सहायता हेतु चलाई गई “इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना” महिलाओं के साथ- साथ पुरुषों को भी प्रदान कर दी गई। यह खबर जितनी हास्यास्पद है, उतनी ही चिंताजनक भी।
- तेलंगाना सरकार के महत्वाकांक्षी 'कालेश्वरम प्रोजेक्ट' में कैग ने कई प्रकार की अनियमितता पाई। इस प्रोजेक्ट के लागत-लाभ अनुपात पर भी सवालिया निशान उठाए।
- भारत माला परियोजना पर लागत तथा टेंडर देने पर भी भ्रष्टाचार के सवाल।

- इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में तो पुस्तिका टेंडर में भी 3187 लाख तक का घोटाला कर दिया गया ।
- PMJAY {प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना} में वित्तीय अनियमितता ।
- 2012-13 में बहुचर्चित 2जी स्पेक्ट्रम स्कैम
- बिहार की राजनीति में भूचाल लाने वाला चारा घोटाला, 1995
- ONGC के विलंबित भुगतान तथा कर चोरी का मामला

सन 1985 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने कहा था कि “सरकार द्वारा लोगों की कल्याणकारी योजना में दिया गया हर एक रुपए में से सिर्फ 15 पैसे ही जरूरतमन्द तक पहुँचता है” । खैर, ये बाकी का बचा पैसा कहाँ जा रहा है, ये भी सिर्फ कैग बता सकता है ।

सुझाव एवं सुधार

सुधार अनवरत रूप से अनंत काल तक चलने वाली प्रक्रिया है । फिर चाहे वह कोई व्यक्ति विशेष हो या फिर कोई संवैधानिक संस्था । ठीक इसी तरह कैग में भी आधुनिकरण तथा सुधारों की आवश्यकता है । कैग में सुधार हेतु पूर्व कैग श्री विनोद राय के द्वारा दिये गए सुझाव निम्नलिखित हैं:-

- कैग के दायरे को और बढ़ाकर सभी सार्वजनिक- निजी सहभागी तथा पंचायती राज संस्थाओं द्वारा वित्तपोषित संस्थानों को लाना चाहिए ।
- 1971 के एक्ट में संशोधन की जरूरत ताकि शासन में हुए बदलाव से तोल-मोल हो सके ।
- नए कैग के चुनाव हेतु मुख्य सतर्कता आयुक्त (CVC) के चुनाव की तरह कॉलेजियम की जरूरत ।

कैग ने न केवल भारत की संस्थाओं अपितु वैश्विक संस्थाओं का भी सफलतापूर्वक ऑडिट किया है । भारत के वर्तमान कैग श्री गिरीश चन्द्र मुर्मू को वैश्विक संस्था जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने भी बाहरी लेखापरीक्षक के पद हेतु चुना है । यही नहीं खाद्य व कृषि संगठन, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी तथा रासायनिक हथियारों के निषेध संगठन में भी गवर्निंग बोर्ड के सदस्य हैं ।

इतने उच्च पद पर भारत के कैग की नियुक्ति भारत की इस क्षेत्र में बढ़ती हुई विश्वसनीयता और पराकाष्ठा को बतलाता है । जो कि भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व कदम है ।

21वीं सदी, एक ऐसा युग जहां सम्पूर्ण विश्व के कई देशों की लोकतांत्रिक व्यवस्था चरमरा सी गई है, वहाँ पर भारत के कैग ने बिना किसी राजनीतिक दबाव में आए, बिना किसी पक्षपात तथा सार्वभौमिकता के सिद्धांत पर चलते हुए सिर्फ और सिर्फ भारत की जनता के विश्वास तथा उसके हितों के संरक्षण हेतु कार्य किया है । जैसा कि कैग की आधिकारिक टैग लाइन में भी निहित है-

“लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा”

विनम्रता की अहमियत: दिनचर्या, कार्य स्थल संस्कृति और मानव संबंधों में

गोविंदराज कोटगिरे

लेखाकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना



आज के तेजी से बदलते जीवन में हमें धैर्य और विनम्रता की आवश्यकता होती है, जो हमें सहयोगी और समर्थ बनाती है। विनम्रता एक महत्वपूर्ण गुण है जो हमें अपनी व्यक्तित्व के विकास में मदद करता है और हमें समाज में संगठित रखने में सहायक होता है।

कार्य स्थल में विनम्रता का महत्व अत्यंत उच्च है। यहाँ, विनम्रता की भूमिका विभिन्न स्तरों पर दिखाई देती है। एक सफल प्रबंधक वह होता है जो अपने कर्मचारियों का सम्मान करता है, उन्हें सुनता है, और उनके साथ मिलकर निर्माण करता है। उदाहरण के रूप में, एक अच्छा प्रबंधक हमेशा अपने कर्मचारियों की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करेगा, उन्हें समर्थन प्रदान करेगा, और उनके साथ एक टीम के रूप में काम करेगा। वह अधिकार या प्रभुत्व के साथ नहीं बल्कि विनम्रता और करुणा के साथ नेतृत्व करते हैं। वे अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं, प्रतिक्रिया मांगते हैं और दूसरों को सफल होने के लिए सशक्त बनाते हैं। विनम्रता को अपनाकर, नेता अपनी टीम के सदस्यों के बीच विश्वास, वफादारी और वास्तविक सहयोग को प्रेरित करते हैं।

एक अच्छा कर्मचारी भी विनम्रता का महत्व समझता है। वह अपने सहयोगी के विचारों का सम्मान करता है, सहयोगी के साथ सहानुभूति और संवेदनशीलता दिखाता है, और कभी भी अपने अहंकार का विस्तार नहीं करता। विनम्रता सहकर्मियों के





बीच सहयोग, सहानुभूति और आपसी सम्मान को बढ़ावा देती है, एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करती है जहां हर कोई अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए मूल्यवान और सशक्त महसूस करता है। एक टीम मीटिंग की कल्पना करें जहां विचार स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होते हैं, और प्रत्येक आवाज को समान सम्मान के साथ सुना जाता है। यह सामंजस्यपूर्ण गतिशीलता, समावेशिता और नवीनता का माहौल तैयार करती है, जहां व्यक्ति पनपते हैं और सामूहिक लक्ष्य हासिल होते हैं।

एक अच्छा कार्य स्थल वातावरण विनम्रता को संजीवनी देता है। यहाँ, संगठन के सभी स्तरों पर विनम्रता को महत्व दिया जाता है और लोग एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। निःसंदेह, कार्यालय जीवन चुनौतियों

से रहित नहीं है। कठिन समय सीमा, अप्रत्याशित असफलताएँ - ये सभी यात्रा का हिस्सा हैं। लेकिन विपत्ति के इन क्षणों में ही विनम्रता की असली ताकत सबसे अधिक चमकती है। अहंकार या दोष के आगे झुकने के बजाय, विनम्र, पेशेवर लचीलापन, अनुग्रह और अपने अनुभवों से सीखने की इच्छा के साथ चुनौतियों का सामना करते हैं।

विनम्रता की संस्कृति बनाने के लिए संगठन के प्रत्येक सदस्य के सामूहिक प्रयास करने की और प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता होती है। यह एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देने के बारे में है जहां भेद्यता को स्वीकार किया जाता है, प्रतिक्रिया का स्वागत किया जाता है और सहानुभूति प्रचुर मात्रा में होती है। कोने के कार्यालय से लेकर कक्ष तक, प्रत्येक व्यक्ति में विनम्रता के साथ नेतृत्व करने और अपने कार्य स्थल में सकारात्मक बदलाव को प्रेरित करने की शक्ति है। इसे अपनाकर, हम ऐसे कार्य स्थल विकसित कर सकते हैं जहां सहयोग पनपता है, नेता प्रेरणा देते हैं और व्यक्ति फलते-फूलते हैं।

समाज में विनम्रता का महत्व भी उतना ही है। एक विनम्र व्यक्ति अपने समर्थकों का सम्मान करता है, उनकी बात सुनता है, और उनके साथ धैर्य और सम्मान से व्यवहार करता है। यह उसके सम्पर्कों को मजबूत बनाता है और उनकी ज़िन्दगी में नई ऊर्जा और उत्साह भरता है।

सारांशतः विनम्रता हमें अपने दैनिक जीवन में, कार्य स्थल में, और मानव संबंधों में सफलता की ओर ले जाती है। यह हमें एक सहयोगी और समर्थ वातावरण में रखती है, जहाँ हम सहयोग करते हैं, समस्याओं का समाधान ढूँढते हैं, और एक-दूसरे के साथ समर्थन करते हैं। इसलिए, हमें विनम्रता का महत्व समझना चाहिए और इसे हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए कार्यान्वित रहना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण: आशय एवं आवश्यकता

नंदिनी साव

कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय म.ले.(ले.प.)
तेलंगाना



“स्त्री ही ब्रह्मा बभूविथ”



स्त्री ही ब्रह्म ज्ञान की अधिष्ठात्री है, स्त्री का अस्तित्व ही सृष्टि का मूलाधार है। स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है। स्त्री परिवार का केंद्र बिंदू होती है। परंतु विडंबना यह है कि इतनी सशक्त होने के बावजूद भी उसके सशक्तिकरण की आवश्यकता महसूस हो रही है। जबकि हकीकत तो यह है कि महिलाओं के सशक्तिकरण की नहीं, बल्कि सामंतवादी सामाजिक मानसिकता के सशक्तिकरण की आवश्यकता है, क्योंकि समाज में धनोपार्जन के कारण पुरुष प्रधान हो गए, जबकि परिवार को संभालने वाली महिलाएं कमजोर समझी जाने लगी।

सदियों से पितृसत्तात्मक सोच ने समाज में महिलाओं को घर की चाहरदीवारी तक सीमित कर उन्हें एवं उनकी स्वतंत्रता को एक प्रकार से लॉकडाउन किया है, जिसकी जड़े काफी पुरानी हैं। समाज में महिलाओं के साथ जन्म से लेकर मृत्यु तक भेदभाव होता है। उन पर कार्य से लेकर पहनावे तक कई नियम थोपे जाते हैं। स्त्री शिक्षा से कहीं अधिक पुरुषों के लिए शिक्षा की जरूरत है, क्योंकि जब पुरुष मानसिक रूप से शिक्षित होंगे, तभी समानता आधारित समाज का निर्माण संभव हो पाएगा। समाज की इस संकीर्ण रुढ़िग्रस्त मानसिकता को उखाड़ फेंकने के लिए महिला सशक्तिकरण से सामाजिक सशक्तिकरण की ओर अग्रसर होना जरूरी है। यह न केवल सामाजिक न्याय एवं समानता की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि राष्ट्रीय विकास के लिए भी आवश्यक है, क्योंकि महिलाएं परिवार का निर्माण करती हैं, परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र का विकास होता है। महात्मा गांधी ने कहा था, “एक आदमी को पढ़ाओगे तो एक व्यक्ति शिक्षित होगा। एक स्त्री को पढ़ाओगे तो पूरा परिवार शिक्षित होगा।”

वहीं साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने भी इस कथ्य पर जोर देते हुए कहा, “स्त्री शिक्षित होगी तो देश दोनों हाथों से काम करेगा। देश की उन्नति में कोई संदेह नहीं रहेगा।”

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्रीमती सुषमा स्वराज, कल्पना चावला, कमला हैरिस, श्रीमती ओबामा, प्रिति पटेल, किरण बेदी, डॉ. सीमा राव, हिमा दास, स्मृति मंधाना, मैरीकॉम, साइना नेहवाल, पीवी सिंधु, गीता फोगाट जैसी असंख्य महिलाएं महिला सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण हैं और असंख्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत भी। “महिला सशक्तिकरण” का आशय महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने से है, जिससे वह अपना सर्वांगीण विकास अर्थात् व्यक्तिगत,

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि हर स्तर पर अपना विकास सुनिश्चित कर सकें। महिला किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का महत्त्वपूर्ण अंग होती है। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था- “जब तक नारी की दशा में सुधार नहीं होता, विश्व के कल्याण की कोई संभावना नहीं है।”

भारत का इतिहास - पृष्ठ स्त्री गरिमा से मंडित है। प्राचीनकाल में महिलाओं को देवतुल्य माना जाता था। शास्त्रों में वर्णित है-

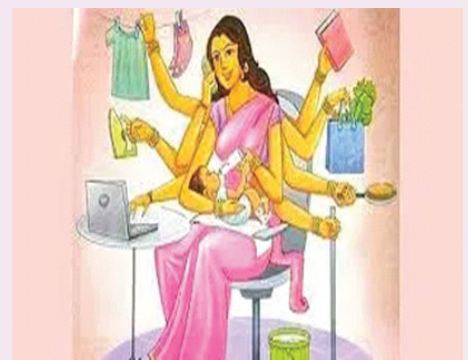
**"यत्न नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तन्न देवताः ।
यत्नैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तन्नाफलाः क्रियाः ॥ "**

अर्थात् जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नहीं होता है, वहाँ किए गए समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। मध्यकाल तक आते-आते नारी की यह छवि धूमिल हो गई। पितृसत्तात्मक



सामंती रुढ़ियों से ग्रस्त समाज में उन्हें तमाम तरह के रीति रिवाजों की जंजीरों में जकड़ मानसिक रूप से कमजोर किया गया, उन्हें घर की चाहरदिवारी तक सीमित कर शिक्षा से वंचित रखा गया। समाज में अशिक्षा, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी रुढ़ियों का प्रचलन बढ़ गया। यही कारण है कि वैदिक काल में जो नारी शीर्ष पर थी, मध्यकाल में वह हाशिए पर आ गई। समाज में स्त्री के प्रति क्रूरता दिखाने को पुरुषत्व समझा जाने लगा और स्त्री के दबे रहने

को स्त्रीत्व। इसके पीछे कुतर्क ये दिया जाने लगा कि स्त्री जैविक रूप से दबू है, जबकि पुरुष में पार्श्विक प्रवृत्ति अधिक होती है। इस कारण स्त्री पर क्रोध आने पर पुरुष का हिंसक होना स्वाभाविक है। आधुनिक काल में स्त्री की इस दशा में थोड़ा सुधार हुआ। आधुनिक काल में स्त्री को अधिकार प्राप्त है। उसे कमाने का अधिकार है, पर उस कमाई को अपनी मर्जी से खर्च करने का अधिकार नहीं है, उसे अपने पति से अनुमति लेकर खर्च करना होता है। परिवार में बच्चा पैदा करने से लेकर उसके पालन - पोषण की जिम्मेदारी स्त्री की ही है, लेकिन बच्चे की पढ़ाई और उनके शादी - ब्याह जैसे निर्णय लेने का अधिकार पुरुष का ही होता है। इस प्रकार स्त्री दोहरे दर्जे की जिंदगी व्यतीत करती है। प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने स्त्री की इस दशा को सुंदर पंक्तियों में व्यक्त किया है-



**"पति को देवतुल्य हम माने, बच्चों की भी दासी हैं,
सेवा सदा करें, नहीं सोचे भूखी हैं या प्यासी हैं,
हे भगवान ! हाय ! तिस पर भी उपेक्षा कैसी पाती हैं,
ढोल तुल्य ताड़न अधिकारी हम बनाई जाती हैं ॥"**

भारतीय स्त्रियों के मन-मस्तिष्क में जीवन-संघर्ष, हास-परिहास, गीत-अनुष्ठान, रीति-रिवाज, सामूहिक क्रिया-कलापों के जरिए पीड़ा को सह पाने की परंपरागत युक्तिहीन युक्तियां सदियों से गढ़ी गई। भारतीय समाज में पुरुष सत्ता और वर्चस्ववादी सामंती संरचना से जूझ रही असंख्य स्त्रियों के दुःख और पीड़ा को कवयित्री अनामिका ने इन पंक्तियों में व्यक्त किया है-

“जो बातें मुझको चुभ जाती हैं,
मैं उनकी सुई बना लेती हूँ
चुभी हुई बातों की ही सुई से मैंने
टाँके हैं फूल सभी धरती पर।”

आज के दौर में महिलाओं को शोषण, अत्याचार एवं भेदभाव से मुक्त कर समाज में उनके वास्तविक अधिकारों को प्राप्त कराने, महिलाओं को सक्षम बनाने के साथ देश, समाज एवं परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। महिलाओं को स्वच्छ और उपयुक्त पर्यावरण की जरूरत है जहाँ वो हर क्षेत्र में अपना फैसला, विचार प्रस्तुत कर सकें, चाहे वह स्वयं के, देश, समाज या परिवार के लिए हो। महिला सशक्तिकरण के मार्ग में चुनौतियां: देश को पूरी तरह से विकसित बनाने तथा विकास में आगे बढ़ने के लिए महिला सशक्तिकरण बेहद जरूरी है। जब तक महिलाएं सशक्त नहीं होंगी तब तक आत्म निर्भर भारत के लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य समाज की सोच या मानसिकता में बदलाव लाना है। इसके लिए प्रतिवर्ष 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय दिवसीय महिला दिवस मना कर समाज को महिलाओं की दशा पर विचार करने हेतु तो प्रेरित किया जा सकता है, पर महिला सशक्तिकरण की चुनौतियों को दूर करने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करना होगा, क्योंकि तेजी से बदलते परिवेश में एक ओर जहां महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही हैं, वहीं दूसरी ओर समाज में महिलाओं से संबंधित अपराधों को भी बढ़ते हुए स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। सामंती मानसिकता, लैंगिक असमानता, अपहरण, बलात्कार, अशिक्षा, दहेज प्रथा, घरेलु हिंसा, महिला तस्करी, एसिड एटैक जैसी सामाजिक बुराईयां महिला सशक्तिकरण के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती हैं।



स्वस्थ एवं पोषित महिलाएं सशक्त राष्ट्र की आधारशिला हैं। अतः 'महिलाओं के विकास' से 'महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास' पर जोर देना होगा, तभी सही मायनों में महिलाएं सशक्त होंगी। महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों को सफल बनाने हेतु यह आवश्यक है कि समाज की मानसिकता, विशेषतः स्वयं महिलाओं की मानसिकता में परिवर्तन लाया जाए। समाज महिलाओं को मात्र महिला की दृष्टि से न देखे, अपितु उन्हें एक मनुष्य माने तथा महिलाएं भी स्वयं को अबला नहीं सबला समझें। इसके साथ ही महिलाओं की स्थिति को हीन बनाने वाली सामाजिक परम्पराएं समाप्त कर दी जानी चाहिए, महिलाओं को साक्षर बनाने की दिशा में ठोस प्रयास किए जाने चाहिए, महिलाओं की गरिमा का सम्मान किया जाना चाहिए, उत्पीड़ित महिलाओं को सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों द्वारा पर्याप्त सहायता दी जानी चाहिए तथा महिलाओं के लिए स्व-रोजगार योजनाओं आदि को पर्याप्त महत्व प्रदान किया जाना चाहिए। महिला सशक्तिकरण सामाजिक न्याय, समानता एवं राष्ट्रीय विकास के लिए जरूरी है।



माँ

अतुल कुमार

लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद



माँ तेरी ममता से प्यारा कुछ नहीं
तेरे आशीर्वाद से अपना संसार सजाने का मन करता है
माँ तू दुनिया है मेरी
फिर भी सारी दुनिया तेरे कदमों में रखने का मन करता है
आज सब कुछ छोड़ वापस माँ तेरे गोद में सर रखने का दिल करता है।

तेरे बोलने हँसने से उतना नहीं
लेकिन तेरे चुप हो जाने से फर्क पड़ता है
तेरी एक हँसी के खातिर
सब कुछ छोड़ देने का मन करता है
आज सब कुछ छोड़ वापस माँ तेरे गोद में सर रखने का दिल करता है।

तू है तो मैं हूँ
तुझे खोने से डर लगता है।
अपनी बढ़ती जवानी से ज्यादा
तेरी उम्र बढ़ने से डर लगता है
आज सब कुछ छोड़ वापस माँ तेरे गोद में सर रखने का दिल करता है।

पिता का साया सर पे है ज़रूरी लेकिन
दोस्तों के साथ भी कभी अधूरा-अधूरा सा लगता है
आज सब कुछ छोड़ वापस माँ तेरे गोद में सर रखने का दिल करता है।

याद आती है तुम्हारी हर दिन
कभी- कभी डर भी लगता है
अब आ जाओ पास मेरे
आज सब कुछ छोड़ वापस माँ तेरे गोद में सर रखने का दिल करता है।



ज़िंदगी के नाम

सौरव पाण्डेय

लेखापरीक्षक
कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), तेलंगाना



ज़िंदगी के नाम

ज़िंदगी एक हसीन मंजर है
खूबसूरती से भरी इसकी डगर है।
कुछ पल हसीन तो कुछ अंधेरे में डूबे हैं
इसमें रहस्यों के कई सूबे हैं।
डगमगाते पैर, टटोलती आँखों से शुरू होता है इसका सफर
बदलती रहती है समझ की कश्ती हर लहर
नवल मासूमियत को परिवार का प्रेम मिलता है
बोध का दायरा हर पहर बढ़ता है।
मस्तिष्क की ऊर्जा को संगठित करने
आता है एक नया गुलिस्तां
जिसे स्कूल कहकर नवाजते, और
जो ले आता है रंगों की एक नई दुनिया
दोस्ती, आदर, अनुशासन जीवन को नए लगते
दिखते नहीं ये खिलाड़ी पर जीवन को आकार देते
गणित, विज्ञान दुनिया की पहचान कराते
साहित्य हमारे शब्दों का आकार बनाते

बदलती राहों में शिक्षक नैतिकता का पाठ सिखाते
तो उधर दोस्ती के नए रिश्ते, पलों को खुशनुमा बनाते ।
उम्र के साथ मन की आकांक्षाएं इंसान को उलझाती
अपनी उम्मीदें कभी सफल तो कभी असफल हो जाती ।

इस उठा-पटक में आध्यात्म काम आता
स्थितप्रज्ञता और नई चुनौतियाँ साथ दोनों ले आती ।
भू-जगत के प्रलोभन एक बार फिर मुखर हो जाते
इंसान को रिझाते, घुमाते और नचाते
प्रलोभन की तीव्रता उस ज्ञान को भुलाती
चाहत की ना-पूर्ति शेष और कुंठा को जगाती ।

उम्मीद की इस पूर्ति रिक्ति का खेल,
इंसान को कठपुतली बनाता
कर्मयोग और स्थितप्रज्ञता का सिद्धांत,
एक बार फिर काम आता
फिर वही जो प्रलोभन के पास नहीं
सशक्त वही जिनमें जगत-रस की प्यास नहीं ।

प्रलोभन से ऊपर उठता इंसान,
जगत को देखता और मुस्कुराता है ।
मुस्कुराहट का राज कुछ यूँ बयाँ करता है,
जीवन एक खेल है जो प्रतिपल बदलता है ।

इस खेल का मजा
उसी को आता है
जो इसे खेल समझ पाता है ।

हमारे बुजुर्गः हमारी धरोहर

रोहन कुमार

कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), हैदराबाद



अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥

मनुस्मृतिः II-121

अर्थ- जो व्यक्ति सुशील और विनम्र होते हैं, बड़ों का अभिवादन व सम्मान करने वाले होते हैं तथा निरंतर वृद्धों की सेवा करने वाले होते हैं, उनकी आयु (उम्र), विद्या (शिक्षा), यश (कीर्ति) और बल (शारीरिक ताकत) इन चारों में वृद्धि होती है।

हमारे बुजुर्ग हमारी धरोहर हैं। वे हमारे परंपरागत ज्ञान, संस्कृति और मूल्यों के धारक होते हैं जो हमें हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के प्रति संवेदनशीलता प्रदान करते हैं। उनकी अनमोल विचारधारा, अनुभव और समझ हमें अपने जीवन में सही और उचित निर्णय लेने में मदद करती है। उनके साथ बिताया हुआ समय अनमोल होता है और हमें हमारे रूढ़िवादी और समृद्ध पारंपरिक जीवन का महत्व समझाता है। बुजुर्गों का सम्मान करना और उनसे सिखना हमारी जिम्मेदारी है। उनकी सेवा और समर्थन करना न केवल हमें उनके प्रति आभारी बनाता है, बल्कि यह हमें सांस्कृतिक और मानवीय सहयोग का अहसास कराता है। हमें उनके अनुभव से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और उनकी सलाह को मानना चाहिए, क्योंकि यह हमारे लिए एक मूल्यवान संस्थान के रूप में काम करता है। इस प्रकार, हमारे बुजुर्ग हमारे लिए न केवल एक मार्गदर्शक होते हैं, बल्कि वे हमारी प्रेरणा और स्थायित्व के स्रोत के रूप में काम करते हैं। उनका सम्मान करना हमारी जिम्मेदारी है और हमें उनके साथ सम्मानपूर्वक और प्रेम से व्यवहार करना चाहिए।



समाज में बड़े बुजुर्गों का महत्व

समाज का विकास और समृद्धि उसके व्यक्तियों के सक्रिय सहयोग पर निर्भर करता है। बड़े बुजुर्ग समाज के महत्वपूर्ण अंग होते हैं जिनका महत्व समाज के विकास में अभूतपूर्व है। बुजुर्गों का अनुभव, ज्ञान और शिक्षा समाज को सही दिशा में आगे बढ़ने में मदद करता है। बड़े बुजुर्गों का महत्व उनके अनुभव में छुपा होता है। उनके जीवन के कई प्रसंग, संघर्ष और सफलताएँ समाज को सीखने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करते हैं। उनकी व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभव समाज को सही मार्ग पर चलने में मदद करते हैं। बुजुर्गों का ज्ञान और उनकी शिक्षा भी समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने अपने जीवन के दौरान बहुत सारी जानकारीयाँ प्राप्त की होती हैं जिन्हें वे आगे की पीढ़ियों के साथ साझा कर सकते हैं। इसके अलावा, उनका सामाजिक और नैतिक ज्ञान समाज को सही और उचित निर्णय लेने में मदद करता है। उनके आदर्श, नैतिकता और समर्थन समाज को स्थिरता और सहयोग प्रदान करते हैं। वे समाज के लिए एक मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत होते हैं जो समाज के सभी सदस्यों को एकजुट करते हैं। उनके बिना समाज अधूरा माना जाता है। उनका समर्थन और सहयोग समाज को समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, हमें बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए और उनके साथ समाज के समृद्धि में सहयोग करना चाहिए। बुजुर्गों के अनुभव और ज्ञान का समुचित प्रयोग समाज के लिए अद्वितीय मूल्य रखता है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से हम अपने बड़े बुजुर्गों की महत्ता को और सुव्यवस्थित ढंग से समझ सकते हैं:-

- 1) **बुजुर्गों का अनुभव:** बुजुर्गों का अनुभव समाज में विशेष महत्व रखता है। उनका जीवन भरा संघर्ष, समर्पण और सीखों से भरपूर होता है जो उन्हें समाज के लिए एक महान संपत्ति बनाता है।
- 2) **विशेषज्ञता का दान:** बुजुर्ग समाज को अपनी विशेषज्ञता का दान करते हैं। उनके अनुभव और ज्ञान का प्रयोग समाज की समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है।
- 3) **समाज का आधार:** बुजुर्ग समाज का आधार होते हैं। उनकी सलाह, समर्थन और संगठन क्षमता समाज को समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ाती है।
- 4) **परिवार के मूल्य:** बुजुर्गों का समाज में स्थान उनके परिवार के मूल्य को समझने में मदद करता है। उनका समर्थन और संबंध परिवारिक संबंधों को मजबूत बनाता है।
- 5) **नैतिक मार्गदर्शन:** बुजुर्ग समाज को नैतिक और मानवीय मूल्यों का सही मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनकी सलाह और आदर्शवादी जीवनशैली समाज को सद्भावना और सम्मान की भावना सिखाती है।
- 6) **संघर्ष की गवाही:** बुजुर्गों का जीवन समाज में संघर्षों की गवाही होता है जिससे नवीनतम पीढ़ियों को मार्गदर्शन प्राप्त होता है।
- 7) **परंपरा के रक्षक:** हमारे बुजुर्ग हमारी परंपराओं, रीति-रिवाजों, और सांस्कृतिक विरासत के रक्षक होते हैं। वे प्राचीन रीति-रिवाजों, कहानियों, और मूल्यों को आगे बढ़ाते हैं और हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हैं। हमें उनसे अपनी संस्कृति के बारे में सीखने को मिलता है। उनका अनुभव समाज की संस्कृति को संजीवनी प्रदान करता है।

- 8) **प्रेरणा का स्रोत:** बुजुर्गों के जीवन के किस्से, संघर्षों, और उपलब्धियों के माध्यम से वे प्रेरणा के स्रोत के रूप में काम करते हैं। उनकी दृढ़ता, सहनशीलता, और ज्ञान युवा पीढ़ियों को उनके जीवन में आने वाली चुनौतियों को पार करने और अपने जीवन में सफलता की दिशा में प्रेरित करते हैं।
- 9) **पीढ़ियों के बीच सेतु:** बुजुर्ग हम युवाओं के बीच सेतु के रूप में कार्य करते हैं, जो परिवार के सदस्यों के बीच समझ, सम्मान, और सहानुभूति को बढ़ावा देते हैं। वे अपने अनुभवों और सीखों को युवा व्यक्तियों के साथ साझा करते हैं, जिससे पीढ़ियों के बीच संबंधरूपी डोर और मजबूत होती है।
- 10) **भावनात्मक समर्थन का स्रोत:** बुजुर्ग अपने परिवार के सदस्यों को कठिन समयों में निःस्वार्थ प्यार, मार्गदर्शन, और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं। उनकी उपस्थिति आराम और आत्मविश्वास लाती है, और उनके ज्ञान के वचन शांति और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।

बुजुर्गों के समक्ष चुनौतियाँ

बढ़ती उम्र के साथ जीवन के इस पड़ाव में हमें अपने बड़े बुजुर्गों का विशेष खयाल रखने की आवश्यकता है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से हम अपने बड़े बुजुर्गों की महत्ता को और सुव्यवस्थित ढंग से समझ सकते हैं:

- 1) **सामाजिक अलगाव:** आधुनिकीकरण और शहरीकरण के कारण बुजुर्गों को परिवार से अलग होने की समस्या का सामना करना पड़ता है। यह अकेलापन उन्हें अवसाद की तरफ से जा सकता है।
- 2) **स्वास्थ्य सेवाओं की कमी:** बुजुर्ग व्यक्तियों को उनकी विशेष आवश्यकताओं के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं और समर्थन की कमी का सामना करना पड़ सकता है।
- 3) **आर्थिक संकट:** बुजुर्ग लोगों के लिए आर्थिक संकट से मुकाबला करना मुश्किल हो सकता है, विशेष रूप से जिन्हें पेंशन या समर्थन की कमी होती है। उन्हें अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी दूसरे पर निर्भर होना पड़ता है।
- 4) **आधुनिक तकनीक का अभाव:** तकनीकी प्रगति और डिजिटलीकरण के क्षेत्र में बुजुर्ग पीछे रह जाते हैं, जिसका परिणाम हो सकता है कि वे सामाजिक संदेशों, सेवाओं और सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं।
- 5) **बुजुर्गों का उत्पीड़न:** हमारे समाज के कुछ परिवारों में बड़े बुजुर्गों को बोझ या भार समझा जाता है जो कि बिल्कुल गलत है। इस वजह से उन्हें कई तरह के उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है।
- 6) **शिक्षा की कमी:** शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण बुजुर्ग व्यक्तियों को समाज में अपने अधिकारों की जानकारी नहीं होती, जिससे उन्हें उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने में कठिनाई होती है।

इन चुनौतियों का सामना करते हुए, समाज को बुजुर्गों के साथ साझेदारी करके उनके समर्थन और समाधान प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्हें समाज का हिस्सा मानते हुए उनकी आवश्यकताओं और प्रतिक्रियाओं को महत्व देना चाहिए।

बुजुर्गों की चुनौतियों का समाधान

बुजुर्गों की चुनौतियों का समाधान करने के लिए कई कदम उठाए जा सकते हैं। यहाँ कुछ संभावित समाधानों का उल्लेख किया गया है:

- 1) सामाजिक समर्थन प्रदान करें: समाज को बुजुर्गों के साथ उनकी सामाजिक समर्थन प्रदान करना चाहिए। यह उन्हें मानसिक और भावनात्मक रूप से संतुष्ट और सुरक्षित महसूस कराएगा।
- 2) स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान: समाज को बुजुर्गों के लिए उनकी स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान करना चाहिए। नियमित चेकअप, दवाइयों के लिए सही दिशा निर्देश, और उनकी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल महत्वपूर्ण है।
- 3) आर्थिक समर्थन: बुजुर्गों को आर्थिक सहायता और समर्थन प्रदान करने के लिए विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी योजनाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- 4) तकनीकी शिक्षा और सहायता: बुजुर्गों को तकनीकी शिक्षा और सहायता प्रदान करके उन्हें डिजिटल दुनिया में अधिक सक्रिय बनाने में मदद की जा सकती है।
- 5) सामाजिक उत्सव और कार्यक्रम: बुजुर्गों के लिए सामाजिक उत्सव और कार्यक्रमों का आयोजन करके उन्हें वर्तमान समाज में शामिल किया जा सकता है। इससे उनका मनोरंजन होगा और उन्हें अपने समूह का हिस्सा महसूस होगा।
- 6) शिक्षा का प्रोत्साहन: बुजुर्गों को शिक्षा का प्रोत्साहन और उन्हें समाज में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए स्थानीय स्कूल और कॉलेजों के साथ साझेदारी की जानी चाहिए। शिक्षित बुजुर्गों को स्थानीय स्कूल और कॉलेजों में अपने अनुभव को साझा करने का अवसर प्रदान करने का मौका मिले, इस ओर भी पहल करने की आवश्यकता है।
- 7) धर्म, सांस्कृतिक और सामाजिक समूहों के साथ सहयोग: बुजुर्गों को धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक समूहों के साथ सहयोग करने का मौका देना चाहिए, जिससे उन्हें समाज के साथ मिलकर अपनी समस्याओं का समाधान करने में मदद मिले।

इन समाधानों के माध्यम से, समाज में बुजुर्गों की स्थिति को सुधारा जा सकता है। हमें बुजुर्गों के लिए समाधानों की ओर बढ़ने की आवश्यकता है, जो उन्हें समाज के साथ मिलकर जीने के लिए सक्षम बनाते हैं।

अंत में बस इतना ही कहना चाहूँगा कि हमारे बुजुर्ग हमारे जीवन में एकाधिक और अमूल्य भूमिका निभाते हैं, हमें अपने ज्ञान, प्यार, और मार्गदर्शन से अलंकृत करते हैं। उनका मान, सम्मान, और सराहना करना हमारा कर्तव्य है। उनसे ज्यादा हमें उनकी जरूरत है। हमें उनके साथ सम्मानपूर्वक और प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। हम आज जो भी हैं और भविष्य में जो कुछ भी होंगे, सब उनके आशीर्वाद से ही फलीभूत होगा। सभी बड़े को प्रणाम!



यात्रा वृत्तान्त – रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान

शाहिद रज़ा खान

लेखापरीक्षा
कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), तेलंगाना



ग्रेजुएशन के तीसरे वर्ष में हमारे कॉलेज ने भ्रमण का प्रोग्राम बनाया। छात्रों और प्रोफेसरों ने आपसी सुझाव से रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान का भ्रमण करना तय हुआ। यह मेरी पहली यात्रा थी जिसमें मैं जयपुर शहर से बाहर भ्रमण के लिए जा रहा था।

प्रोफेसर साहब ने हमारे आने-जाने व खाने-पीने का सारा इंतजाम करवा दिया था। योजना के अनुसार हमें कॉलेज से सुबह 5 बजे निकलना था। मेरा घर कॉलेज से दूर था, इसलिए मैंने अपने दोस्तों के साथ कॉलेज हॉस्टल में रुकने का तय किया। सुबह घूमने जाने की खुशी में हम रात को देर से सोए इसलिए देर से उठे। जैसे-तैसे हम कॉलेज गेट पर पहुंचे तो सभी लोग हमारा ही इंतजार कर रहे थे। हम सभी ने ग्रुप फोटो खिंचवाए और प्रिंसिपल साहब ने हमारे सफर को हरी झंडी दिखाई।

सुबह का मौसम बड़ा ही शीतल था और राष्ट्रीय उद्यान घूमने की उत्सुकता हमें आनन्दित कर रही थी। हम सभी ने बाघ को चिड़ियाघर में देखा था लेकिन जंगल में खुले में घूमते बाघ और अन्य वन्य जीव- जन्तुओं को देखना अपने आप में अलग ही अनुभव कराने वाला था।

एक घंटे बाद सर ने एक रेस्टोरेन्ट पर बस रुकवाई जहां हमने नाश्ता किया। वहां हमें एक ट्रैक्टर और बैलगाड़ी दिखाई पड़ी जिस पर बैठकर हमने फोटो खिंचवाए। शहर के लोगों के लिए बैलगाड़ी और ट्रैक्टर की सवारी करना एक अलग ही अहसास होता है।

रास्ते भर में कई गांव, खेत-खलिहान और बागीचे आए जो हमारा ग्रामीण जीवन से परिचय करवा रहे थे। बस में हम सभी ने अन्त्याक्षरी शुरू कर दी और हमारे साथ-साथ प्रोफेसरों ने भी अपनी छिपी हुई संगीत प्रतिभा को उजागर किया।

इसी तरह गाते – मुस्कराते हम कब सवाई – माधोपुर शहर पहुंचे, हमें पता ही नहीं चला। कुछ समय बाद हमारी बस एक स्थान पर रुकी जहां से आगे हमें जीप में बैठकर रणथम्भौर दुर्ग पहुंचना था जो कि ‘रण’ और ‘थम्भा’ नामक पहाड़ियों पर बना हुआ है। दुर्ग के चारों ओर घना जंगल और गहरी खाई है जो इस दुर्ग को भारत के सबसे सुरक्षित दुर्गों में से एक बनाती है। यह दुर्ग UNESCO द्वारा घोषित विश्व धरोहर में भी अपना स्थान रखता है।

दुर्ग के मजबूत पथरीले मार्ग और सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए तथा दुर्ग की बड़ी-बड़ी दीवारें देखते हुए हम प्राचीन गणेश मंदिर पहुंचे, जहां आगन्तुकों से ज्यादा बंदरों का हुजूम था जो श्रद्धालुओं और आगन्तुकों के साथ अटखेलियां कर रहे थे।

यहां से आगे बढ़ते हुए हम किले के शीर्ष पर पहुंचे। जहां से देखने पर दुर्ग के चारों ओर पहाड़ियाँ और घना जंगल दिखाई देता है।





वापस आते समय हमने 32 खंभों की छतरी देखी जिसे हम्मीर कचहरी कहते हैं जो राणा हम्मीर के शौर्य और वीरता का स्मरण कराती है।

यहां से निकलकर हम होटल पहुंचे जहां हमने दोपहर का भोजन किया, जिसमें राजस्थानी खाना; दाल -बाटी और चूरमा था, जिसे सभी ने बड़े चाव से खाया।

यहां से हम रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान पहुंचे, जहां हम दो खुले ट्रक, जिन्हें सफारी कैन्टर्स कहा जाता है में बैठकर अलग-अलग जोन में टाइगर सफारी के लिए निकल पड़े। जंगल में प्रवेश करते ही हमें एक हजार वर्ष से भी अधिक पुराना बरगद का पेड़ दिखा, जिसकी जड़ों ने अब एक बड़े से दरवाजे का रूप ले लिया था। जंगल की ओर जाने वाली सभी गाड़ियां उस बरगद के पेड़नुमा द्वार से होकर जा रही थी। जंगल के दुर्गम व उबड़-खाबड़ रास्तों से होते हुए हम जंगली जीवों हिरन, सांभर, चीतल, मोर, बंदर सांप आदि को देखते हुए आगे बढ़ रहे थे।

लेकिन हम सभी को उत्सुकता थी तो बाघ को देखने की। एक घंटे के इस सफर में हमें बाघ कहीं भी नहीं दिखा। निराश होकर हम वापस लौटने लगे। कुछ दूर जाने के बाद हमारे गाइड ने कैन्टर्स रुकवाए और हम सभी को शांत रहने के लिए कहा। उन्होंने अपने अनुभव से पक्षियों और अन्य वन्य प्राणियों की आवाज से ये अनुभव लगाया कि बाघ हमारे आस-पास ही है।

उत्सुकतावश हमारी धड़कने तेज होने लगी और हम सभी बाघ के आने का इंतजार करने लगे। थोड़ी देर बाद एक बाघ पानी पीने तालाब पर आया जो कि हमसे 20-30 फुट की दूरी पर था। इतने करीब से बाघ को देखना हमें रोमांचक लग रहा था। पानी पीने के बाद वो हमारी तरफ ही आने लगा तो सभी लोग घबराने लगे। हमारे गाइड ने हमें समझाया कि यहां के बाघ मानव पर हमला नहीं करते। कुछ देर बाद बाघ दूसरी तरफ निकल गया और हमें एक अविस्मरणीय क्षण दे गया। शहर की भाग दौड़ भरी दुनिया से दूर प्रकृति को इतने करीब से महसूस करना हम सब के लिए एक नया अनुभव था।

जंगल से लौटते हुए हम काफी प्रसन्न थे और सभी उसी वृत्तान्त पर चर्चा कर रहे थे। उद्यान से वापस आकर हम अपने साथियों के दूसरे ग्रुप से मिले जिन्हें बाघ नहीं दिखा था। हमने बाघ के खींचे गए फोटोग्राफ्स उनके साथ साझा किया।

उत्साह और थकावट से भरे इस सफर में हमने थोड़ा विश्राम किया और रात्रि भोजन ग्रहण कर अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। रास्ते भर जंगल के भ्रमण की बात करते-करते कब जयपुर पहुंचे हमें पता ही नहीं चला।

मैं खुशी ढूँढती हूँ

श्रीमती काजल कुमारी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय – महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय), हैदराबाद



नन्हीं-सी कलियों के मुस्कान में,
उसके हंसने और रोने की तान में,
माथे में लगे काले टीके की चंद्रमा में,
पैरों में बंधे, मठिया घुंघरू की झंकार में,
उसके घुँघराले काली बालों की शाम में,
मैं इनमें खो जाती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

रंग-बिरंगी तितलियों की लावण्यता में,
नन्हीं-सी चिड़ियों की चहकार में,
वो गिलहरियों के कुतर-कुतर कर खाने में,
मेरी खिड़की में बसे कबूतरों की गुटरगु में,
मैं भी इनसे बातें करती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

जब एकांत में बैठकर देखूँ वृक्षों को,
पत्ते जो लहराए हवा के झोंके से,
टहनियों में बसे पक्षियों की चहचहाहट को,
उसके छांव में ही शीतलता पाती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

अपनी गाँव के नदियों- खेतों में,
वो मछलियाँ जो तैरे पानी में,
वो बालियाँ जो इठलाएँ- इतराएँ,
आलू जब आग में कोई पका के खाए,
मैं सबमें घुलती मिलती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।



वो दादियों से गप्पे लड़ाना,
काकी के हाथ की तरकारी खाना,
वो भाइयों से झगड़े करना,
'माँ' की मीठी डाँट सुनना,
इन सब में मैं कहीं डूब जाती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

कोई सब्र से जो सुन ले मेरी बातों को,
जो प्यार से देखे मेरे सपनों को,
जिसके बातों में खुलकर हँस लूँ एक बार,
जिसके आँखों से जान लूँ जीवन का सार,
वैसी आँखों में मैं खो जाती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

जब कभी सँवारू अपने तन को,
वो साड़ी, वो बिंदी, पायल की छन-छन को,
इसके धुन में मैं थिरक उठती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

अगर जो उठूँ कभी सूर्योदय से पहले
कर लूँ योग कुछ पल दो पल में,
ध्यान कर लूँ अपने ईश्वर का,
उस ध्यान में ही सुकून पाती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

खेलूँ जो मैं अपने बच्चों के संग में,
नाच उठूँ मैं उसके रंग में,
उसके मासूमियत में मैं खो जाती हूँ,
इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

जब किसी के चेहरे पे मुस्कान ले आऊँ,
किसी के आँसू को पोछ मैं पाऊँ,
किसी के दर्द को बाँट जो सकूँ,
उसके दर्द को अपना समझती हूँ,
उसके हँसते हुए चेहरे में खुशी ढूँढती हूँ।

जब कभी भावनाएं बस में न हो,
खोखलापन जब काटने को दौड़े,
जब मन की पीड़ा मारे मन को ही,
आँसू भी खुलकर बह न पाए,
उन आँसुओं में मैं डूब जाती हूँ,
उस दर्द में भी खुशी ढूँढती हूँ।

जब अंतर्द्वन्द्व के उधेड़बुन में,
डूब चुका हो मेरा मन,
जब अपने निज अरमानों का,
खुद हंस के हीं गला घोटूँ मैं,
उस दबे हुए अरमानों में भी,
पंख फैलाये आरजू मचलती है,
इन अरमानों में ही खुशी ढूँढती हूँ।

जब कोई न समझे मेरे मन को,
जब अंदरूनी पीड़ा जर्जर करे मेरे तन को,
टूट के बिखरूँ जो बार-बार मैं,
उस बिखराव में भी सिमट जाती हूँ,
इनमें भी मैं खुशी ढूँढती हूँ।

जब हजारों सवाल सर पे मँडराये,
सोच-सोच कर आँहे भर आए,
इस कठिन जीवन को जिया कैसे जाए ?
जवाब को जब ढूँढ़ूँ खुद में ही,
मैं खुद में ही खुद को ढूँढती हूँ,
हाँ, इनमें ही खुशी ढूँढती हूँ।

मेरी साइकिल यात्रा

गौरव कृष्ण श्रीवास्तव

वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
तेलंगाना



साइकिल चलाना एक बहुत ही अच्छा व्यायाम है। अस्सी और नब्बे के दशक में साइकिल चलाना शान की सवारी माना जाता था लेकिन बदलते दौर और आधुनिकता की अंधी दौड़ में साइकिल कहीं गुम सी होती जा रही है। आज विडम्बना यह है कि अब लोग जिम में साइकिल चलाने के लिये मोटर साइकिल या कार का सहारा लेते हैं।

साइकिल चलाने से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है। रोजाना करीब आधा घंटा साइकिलिंग, हमें मोटापा, हृदय रोग, मधुमेह, गठिया, और मानसिक बीमारी जैसी कई घातक बीमारियों से बचाता है। साइकिल चलाने से हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

इस लेख में मैं अपनी एक साइकिल यात्रा के अनुभव को साझा कर रहा हूँ जो मेरे जीवन की सबसे लंबी साइकिल यात्रा है।

दिसम्बर 2021 माह में मुझे हैदराबाद के एक साइकिल समूह के बारे में पता चला जो प्रत्येक वर्ष कश्मीर से कन्याकुमारी तक की साइकिल यात्रा पूरी करते हैं और हैदराबाद में भी बहुत अवसरों पर समूह में साइकिल यात्राएं पूरी करते हैं। कुछ ही दिनों में मैं भी उस समूह से जुड़ गया, क्योंकि मुझे भी साइकिल चलाने का शौक है और रोजाना औसतन मैं 05 कि.मी. साइकिल चलाता हूँ।

समूह से जुड़ने के बाद मुझे पता चला कि 06 फ़रवरी 2022 को 'सुचित्रा रोड' से 'स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी' तक की साइकिल यात्रा होना तय हुआ है। इसके लिये मैंने समूह के सदस्यों से संपर्क किया और यात्रा से पहले की जाने वाली तैयारियों के बारे में जानकारी ली। यात्रा में शामिल होने से पहले प्रतिदिन लगभग 15 से 20 कि.मी. साइकिल चलाने का अभ्यास करना था। चूँकि मैं पहले से ही साइकिल चला रहा था तो मुझे इस अभ्यास में कोई ज्यादा परेशानी नहीं हुई, केवल मुझे प्रतिदिन अपनी साइकिलिंग में कुछ कि.मी. और जोड़ने थे। यह अभ्यास मैंने लगभग 25 दिन तक किया। इसके अलावा यात्रा के दिन हेलमेट, पानी की बोतल, कुछ खाद्य पदार्थ आदि रखना अनिवार्य था। इसके अलावा सड़क पर साइकिल चलाने के कुछ नियम भी बताए गये, जैसे की समूह में दो साइकिल सवारों की एक-एक पंक्ति बनाकर चलना, हमेशा सड़क के बाईं ओर चलना, लाल बत्ती पर रुकना इत्यादि। मैंने उपरोक्त सारी तैयारियां कर लीं थी और यात्रा के दिन का इंतजार कर रहा था।

06 फ़रवरी की सुबह मैंने अपने निवास स्थान (खैरताबाद) से साइकिल यात्रा प्रारंभ की, समूह के अन्य सदस्यों से मैं पहले से निश्चित एक स्थान पर मिला और वहाँ से आगे की यात्रा फिर हम सभी ने साथ में शुरू की। समूह में लगभग 40 लोग शामिल थे। यह देखकर बहुत खुशी हुई की समूह में नौजवानों के साथ-साथ महिलाएं और भूतपूर्व सैनिक भी शामिल थे। सभी लोग बहुत उत्साहित थे। फिर हम सभी ने अपनी यात्रा प्रारंभ की। यात्रा के लिये एक यात्रा-समन्वयक भी नियुक्त किया गया था, जो समूह में सबसे पहली पंक्ति में रहकर समूह का मार्गदर्शन कर रहे थे। समूह के साथ साइकिल चलाना अपने आप में एक अलग ही अनुभव था, हम जहाँ से भी गुजरते, लोगों की निगाहें हमारे समूह पर ही रहती। हम जहाँ भी ठहरते लोग हमसे बातचीत करने के लिये उत्सुक दिखाई पड़ते। बहुत से बच्चे और नौजवानों ने हमारे समूह से जुड़ने की इच्छा भी प्रकट की, हम सभी ने मिलकर समूह से

जुड़ने के लिये उन सभी का उचित मार्गदर्शन किया। लगभग आधी यात्रा पूरी करने के पश्चात यात्रा-समन्वयक ने हम सभी को एक स्थान पर रुकने का आग्रह किया, ताकि कुछ साइकिल सवार जो पीछे छूट गये थे वो सभी एक स्थान पर एकत्र हो सकें और सभी लोग थोड़ा सा आराम कर सकें, हालांकि मुझे बिल्कुल भी थकान का अनुभव नहीं हो रहा था। सभी लोगों के आने के पश्चात हमने एक बार फिर से यात्रा प्रारंभ की, और हम अबकी बार अपने गंतव्य पर ही जाकर रुके। स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी 11वीं सदी के भारतीय दार्शनिक रामानुजाचार्य की बैठी हुई मूर्ति है। यह भारत की सबसे ऊंची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊंची बैठी हुई मूर्ति है। वहाँ का दृश्य बहुत ही मनमोहक था। सभी लोगों ने एक साथ समूह में और अकेले भी तस्वीरें खिचवाईं। वहाँ हम लोग लगभग 02 घंटे रुके।

फिर हम सभी लोगों ने चाय-नाश्ता करके वापसी यात्रा प्रारंभ की। रास्ते में हम सभी लोग एक स्थान पर रुके और थोड़ी देर रुकने के पश्चात फिर से चल दिये, यात्रा की थकावट और सूरज की गर्मी की वजह से अब साइकिल चलाना अपेक्षाकृत अधिक कठिन लग रहा था। लेकिन समूह में इतने लोगों का साथ एक दूसरे का उत्साहवर्धन कर रहा था। फिर एक बार रुककर और थोड़ी देर आराम करके सभी लोगों ने अपन-अपने घर की ओर प्रस्थान किया। मैंने कुल 76.1 कि.मी. की दूरी 04 घंटे 13 मिनट में पूरी की (ठहरने के समय को छोड़कर)।

इस प्रकार मैंने अपने जीवन की सबसे लंबी साइकिल यात्रा पूर्ण की। भविष्य में मैं इसी प्रकार की और भी समूह यात्राएं करने की इच्छा रखता हूँ। आज भी मैं नियमित रूप से साइकिल चला रहा हूँ। धन्यवाद।



साउथ जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट में प्रथम पुरस्कार विजेता



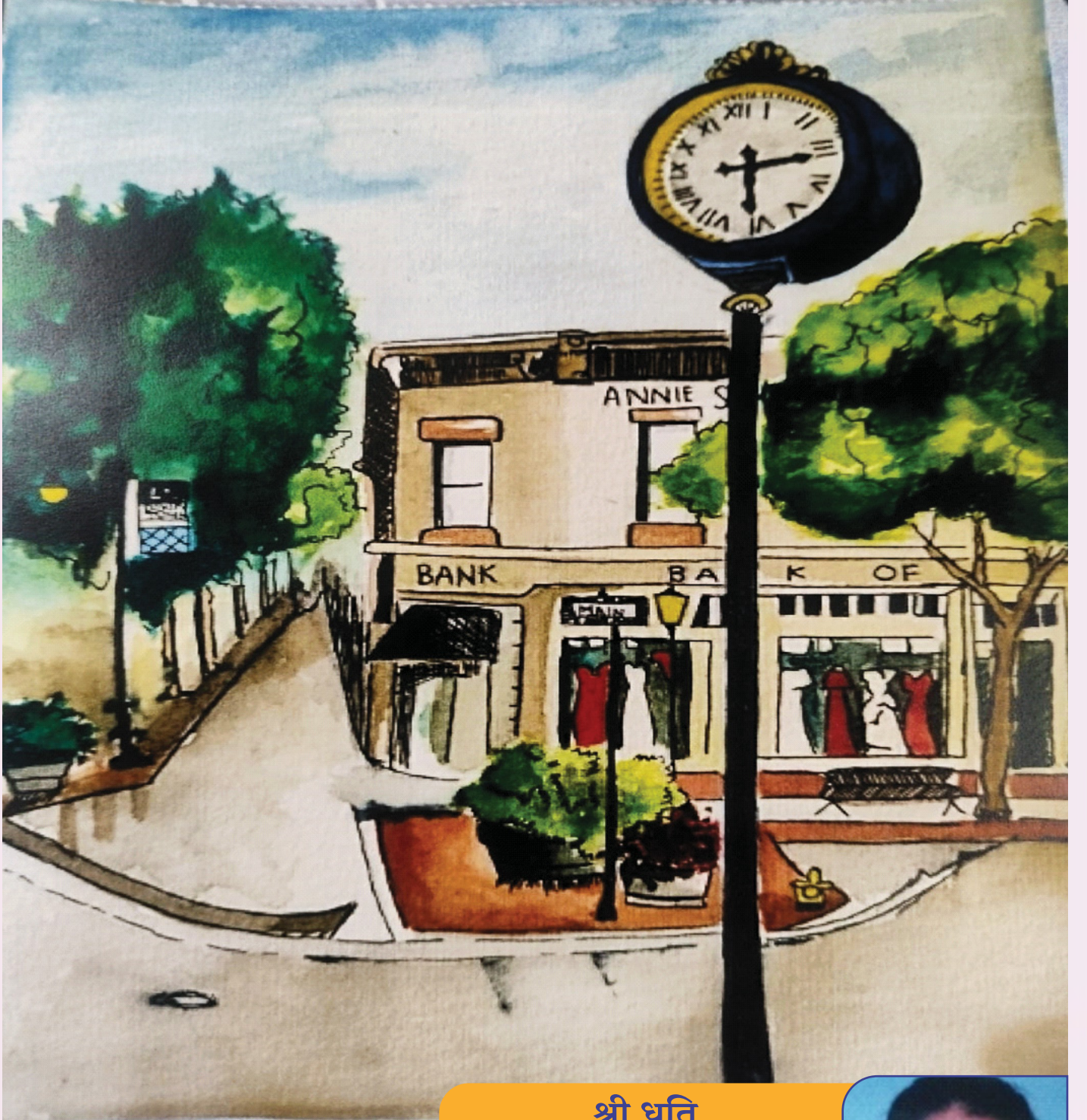
ऑडिट सप्ताह 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ



ऑडिट सप्ताह 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ



शहर का एक दृश्य



श्री धृति

कक्षा-9

पुली- चारुदत्त एम.

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
तेलंगाना





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा में आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता
में प्रथम पुरस्कार विजेता चित्र

चित्र श्री अतुलकुमार